चित्तौड़ की चिता

लेखक—

वीर-हमीर, कुल ललना, प्रणय परिचय, भीष्म प्रतिज्ञा,
माँ, सरोजिनी, सन्देश-गान आदि के
रचयिता

प्रोफेसर रामकुमार जी वर्मा, एम० ए०
"कुमार"

प्रकाशक—

'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक,
इलाहाबाद

दिसम्बर, १९२९

प्रथम संस्करण २,०००

[मूल्य १।) रु०

FIRST EDITION
Three Thousand Copies

Printed and Published
by
R SAIGAL
at
The Fine Art Printing Cottage
Chandralok
28 Edmonstone Road
Allahabad

December
1929

पुस्तक

समर्पण

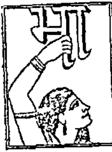
पूज्य पिता

श्री० लक्ष्मीप्रसाद जी

के

कर-कमलों में

परिचय



भावनाओं की वारि धारा में कल्पना की जो तरङ्गें उठा करती हैं, उनका अस्तित्व यद्यपि क्षणिक ही रहता है, तथापि उनकी स्मृति चिरस्मरणीय बन जाती है। ऐसी कल्पना, जिसने एक बार अपना अस्तित्व ऊपर उठा कर सदैव के लिए उसे पतन के गर्त में गिरा दिया, किसी साम्राज्य से कम नहीं, जिसने एक बार मनुष्यों के हृदयों पर शासन कर सदैव के लिए अपने को धूल में मिला दिया। इस कल्पना का अस्तित्व एकान्त सत्य से अधिक महत्वपूर्ण है। सत्य सदैव एक-सा रूप धारण कर विश्व में मरुस्थल की भाँति पड़ा रहता है, कल्पना निर्झर का रूप रख कर नित्य नई लहरों में भूल कर अठखेलियाँ करती हुई प्रवाहित होती रहती है।

चित्तौड़ की जलती हुई व्यथा के प्रदर्शित करने में मैंने इसी कल्पना का सहारा लिया है। चित्तौड़ की कथा

इतिहास के पृष्ठों पर अङ्गारे की भाँति रक्खी है, उसके विश्व-व्यापी सत्य में कल्पना का अस्तित्व व्यर्थ-सा है। किन्तु एक बात है, जिस प्रकार चन्द्र का सौन्दर्य बादलों में घिरे रहने पर और भी अधिक बढ़ जाता है, उसी प्रकार कल्पना के बीच में सत्य का सौन्दर्य और भी मर्मस्पर्शी तथा हृदय द्रावक हो जाता है। इसलिए सत्य के रूप को विकृत करने के लिए नहीं, वरन् सत्य को सजाने के लिए मैंने कल्पना को सेवक की भाँति बुला लिया है।

आज मैं चित्तौड़ की कहानी लिखने बैठा हूँ। उसी चित्तौड़ की, जो हमारी भारतीय ललनाओं के रक्त से लाल है। वहीं सुकुमार ललनाओं ने अपने कोमल हाथों से अपने ही लिए चिता सजाई थी। कहाँ वह प्रचण्ड आग और कहा उनका कोमल शरीर—विचित्र संयोग था! किन्तु यह अमर सत्य है कि इस बलिदान का रक्त भारतीय सभ्यता को उन प्रचण्ड शब्दों में घोषित करता रहेगा, जिसके बल पर वह विश्व-सभ्यता को पैरों-तले कुचल देगा। विश्व संस्कृति में वह आत्म-बलिदान कुछ कम महत्त्व नहीं रखता। उस बलिदान में कान्ति और गौरव की वे चिनगारियाँ भरी हैं, जो

स्वार्थी ससार के कोने-कोने में आग लगा सकती हैं। चित्तौड़ प्रदेश ने भारत को वह गौरव दिया, जो अभी तक किसी देश को अपने प्रदेश स नहीं मिला। चित्तौड़ की चिता की ज्वालाएँ अब भी जब इतिहास के पृष्ठों पर चमकती हैं, तो भाव मूक हो जाते हैं, लेखनी कॉप उठती है, और आँखों से आँसुओं में भीगी हुई चिन गारियाँ निकलने लगती हैं। कैसा समय था ! मुगलों और पठानों का भीषण अत्याचार, उनकी पाप लीला और बीभत्स-वासना का कौतुक—यह सभी हिन्दू-जाति के वक्षस्थल पर ताण्डव नृत्य कर रहे थे।

"तू क्यो ख़ूबसूरत है ?"

"तू क्यों हिन्दू है ?"

"शोख़ी और मस्ती से भरी हुई तेरी आँख क्यो छलकते हुए पैमाने से मिलती-जुलती है ?"

"तु क्यो गुलबदन है ?"

उस समय के वासना में डूबे हुए मुसलमानों की आँखों मे अक्षम्य अपराध गिने जाते थे। जहाँ किसी हिन्दू के घर में सौन्दय का फूल खिला कि उसका घर वीरान हो गया, और वह फूल गिरा यवनों की वासना की भीषण भूमि में। हिन्दुओं पर भीषण से भीषण

अत्याचार किए गए, इसलिए कि वे एकान्त हिन्दू थे। यह था यवनों का निर्दयता-पूर्ण शासन और उनकी वासना मयी प्रवृत्ति !

उस समय भी भस्म की महान् राशि में एक चिनगारी छिपी हुई थी और वह चिनगारी थी चित्तौड़ भूमि की गौरव और सम्मान भावना। सारे हिन्दू-राजा आँख मूँद कर छल पूर्ण नीति में आकर अपमान-रूपी विष-व्यञ्जन खा रहे थे, उस समय भी चित्तौड़ ने सम्मान-युक्त सूखी रोटी ही में अपने जीवन की भावना को जाग्रत रक्खा। उसने संसार के सामने यह आदर्श रखना चाहा कि क्रूर से क्रूर शक्तियों के आगे जीवन के गौरव की विजय हो सकती है, और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही। पठानों और मुगलों ने अपनी सैन्य शक्ति से चित्तौड़ को कुचलना चाहा। चित्तौड़ के क़िले को तो उन्होंने तोड़ दिया, पर वे चित्तौड़ की आत्मा को छू भी न सके। यह था स्वाधीनता का उत्कृष्ट आदर्श !

मेरी पुस्तक का कथानक उस समय से प्रारम्भ होता है, जब मुग़लों का प्रथम अधिष्ठाता बाबर राज्य करता था। उसने भारत को केवल लूटने ही का क्षेत्र नहीं

जाना, वरन् शासन करने का महान् केन्द्र समझा। इसी-लिए न जाने उसने कितने परिश्रम से भारत में अपने राज्य की जड़ जमाई। उसके साथी घर जाने के लिए तड़प रहे थे, काबुल की ठण्डी हवा खाना चाहते थे, किन्तु बाबर ने बड़े गम्भीर शब्दों में उन्हें प्रोत्साहित किया और भारत में रहने का ही अनुरोध किया, जब कि उनके चरणों के समीप भारत की सारी विभूति बिखरी हुई पड़ी थी।

इसी मुग़ल बाबर ने राणा संग्रामसिंह के साथ युद्ध किया। उस संग्राम का वर्णन लेनपूल इस प्रकार करता है —

The great Rana of Chitor the revered head of all the Rajput Princes commanded a vast army One hundred and twenty chieftains of rank with 80 000 horses and 500 War elephants followed him to the field. The lords of Marwar and Amber Gwalior Ajmere Chanderr and many more brought their retainers to this standards

अर्थात्—"राजपूत-राजाओं के सुसम्मानित अधिपति

चित्तौड़ के महाराणा ने एक बहुत बड़ी सेना का सञ्चालन किया। ८० हज़ार घोड़ों और ५०० रण-गजों के सहित १२० सरदारों ने समर-भूमि में पदार्पण किया। मारवाड़ और अम्बर, ग्वालियर, अजमेर, चन्देरी के महाराणाओं तथा अन्य राणाओं ने भी अपनी अपनी सेनाएँ उसकी (संग्रामसिंह की) रण-ध्वजा के समीप खड़ी कीं।" महाराणा ने हाथी पर चढ़ कर सैन्य-सञ्चालन किया। फल यह हुआ कि शत्रु ने उन पर ठीक निशाना लगा कर घायल कर दिया और फलतः राजपूतों को पराजित होना पड़ा।

लेनपूल ने लिखा है कि युद्ध के पश्चात् महाराणा की मृत्यु शीघ्र ही हो गई —

'Rana escaped severely wounded and died soon after "

अर्थात—"राणा बुरी तरह घायल होकर रण भूमि से बाहर निकल गया और कुछ ही समय पश्चात् मर गया।"

"महाराणा यश प्रकाश" से ज्ञात होता है कि युद्ध के बाद जब महाराणा जयपुर राज्य में थे (क्योंकि उन्होंने प्रतिज्ञा की थी "जब तक बाबर को युद्ध में

पराजित न करूँगा, मैं चित्तौड़ नहीं लौटूँगा) उस समय 'जमणा' नाम का चारण महाराणा के सम्मुख गया और उन्हें वीर-रस का एक पद्य सुनाया। पद्य सुन कर महाराणा की निराशा दूर हो गई और उन्होने बाबर के विरुद्ध फिर कमर कसी। किन्तु जब वे युद्ध के लिए जा रहे थे, मार्ग ही में उनका शरीर अस्वस्थ हुआ और अन्त में जनवरी सन् १५२८ में उनका स्वर्गवास हो गया।

दोनो कथनों से ज्ञात होता है कि महाराणा युद्ध के बाद अधिक दिनो तक जीवित नहीं रहे। लेनपूल का कथन तो मृत्यु का समय युद्ध के कुछ समय बाद ही सिद्ध करता है। मैंने अपने कथानक में रोचकता और भाव-तीव्रता लाने के लिए ही लेनपूल का मत ग्रहण कर महाराणा की मृत्यु का समय युद्ध के पश्चात् ही लिख दिया है।

महाराणा का व्यक्तित्व इतिहास में इस प्रकार वर्णित है—"उनका रङ्ग गेहुँआ था, हाथ लम्बे और आँख बड़ी थीं। किन्तु उनकी शारीरिक सुन्दरता उनके शौर्य के कारण बिगड़ गई थी।

"अपने भाई पृथ्वीराज के साथ के झगड़े म उनकी एक आँख फूट गई थी, इब्राहीम लोदी के साथ के दिल्ली

चित्तौड़ के महाराणा ने एक बहुत बड़ी सेना का सञ्चालन किया। ८० हज़ार घोड़ों और ५०० रण-गजों के सहित १२० सरदारों ने समर-भूमि में पदार्पण किया। मारवाड़ और अम्बर, ग्वालियर, अजमेर, चन्देरी के महाराणाओं तथा अन्य राणाओं ने भी अपनी-अपनी सेनाएँ उसकी (सग्रामसिंह की) रण-ध्वजा के समीप खड़ी कीं।" महाराणा ने हाथी पर चढ़ कर सैन्य-सञ्चालन किया। फल यह हुआ कि शत्रु ने उन पर ठीक निशाना लगा कर घायल कर दिया और फलतः राजपूतों को पराजित होना पड़ा।

लेनपूल ने लिखा है कि युद्ध के पश्चात् महाराणा की मृत्यु शीघ्र ही हो गई —

Rana escaped severely wounded and died soon after

अर्थात—"राणा बुरी तरह घायल होकर रण भूमि से बाहर निकल गया और कुछ ही समय पश्चात् मर गया।"

"महाराणा यश-प्रकाश" से ज्ञात होता है कि युद्ध के बाद जब महाराणा जयपुर राज्य में थे (क्योंकि उन्होंने प्रतिज्ञा की थी "जब तक बाबर को युद्ध में

हूँ। एक मुसलमान की हैसियत से तुम्हें इस समय मेरे धर्मयुद्ध में बाधा देना उचित नहीं।" यह पढ़ कर हुमायूँ ग्वालियर ही में रुक गया और चित्तौड़ के युद्ध की समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगा। फिर 'जौहर' के पश्चात् हुमायूँ ने बहादुरशाह से युद्ध किया।

मेरे वर्णन का ढङ्ग इससे कुछ भिन्न है। महारानी करुणा को ज्ञात नहीं था कि बहादुरशाह ने हुमायू को किस प्रकार का पत्र भेजा है, अतएव वे अन्त तक हुमायूँ की प्रतीक्षा ही करती रहीं। इस प्रतीक्षा के अनिश्चित् भावों ने मेरी कविता को मनोवेगों के चित्रण करने का पर्याप्त सामान दे दिया है। आशा है, इस कल्पना शृङ्गार से विज्ञ इतिहासज्ञ रुष्ट न होंगे।

अब मेरी कविता की ओर आइए। मैंने अपनी पुस्तक में छन्द को वीर और करुणा के भावों के उपयुक्त ही चुना है। वीर और करुणा रस के भाव बड़े उन्मत्त होते हैं। उनमें दर्प और रोदन की बड़ी वेगवती शक्तियाँ छिपी हुई हैं। ये जब प्रकट होती हैं तो बड़े वेग और बड़ी शीघ्रता के साथ, पर उनका वेग उन्हें अधिक देर तक निकलने नहीं देता। शब्द निकलते हैं बड़े वेग के साथ, पर वे शब्द होते हैं बहुत ही थोड़े। प्राय देखा जाता

और उदयसिंह। मैंने जान कर भी विक्रम का निर्देश इसलिए नहीं किया है कि उससे कथानक के सौन्दर्य में बाधा पड़ती थी। किसी-किसी इतिहासज्ञ के अनुसार उदयसिंह का जन्म राणा की मृत्यु के बाद हुआ है। कुछ इतिहासज्ञों को यद्यपि यह कथन स्वीकार नहीं है, तो भी काव्य-साम्राज्य में शोक के बाद हर्ष का प्रस्फुटन सौन्दर्य के साँचे में ढला होता है। यही समझ कर, कुछ अन्य इतिहासज्ञों की बात मान कर मैंने उदयसिंह का जन्म युद्ध के बाद ही वर्णित किया है।

एक बात और है। तबाकत-इ-अकबरी में लिखा है कि हुमायूँ ने करुणा की रक्षा तो नहीं की, वरन् एक ओर खड़े होकर बहादुरशाह की चित्तौड़ चढ़ाई का मज़ा देखा। यद्यपि वह बहादुरशाह से लड़ना चाहता था, तथापि वह यह भी चाहता था कि चित्तौड़ के युद्ध के फल के पश्चात् कोई निश्चित कार्य किया जावे। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ फिरिश्ता ने लिखा है कि जब हुमायूँ भी बहादुरशाह से लड़ने के लिए चित्तौड़ को रवाना हुआ और जब ग्वालियर पहुँचा, तो उसको बहादुरशाह का एक पत्र मिला। उसमें लिखा था कि—'मैं हिन्दुओं (विधर्मियों) के विरुद्ध जिहाद (धर्मयुद्ध) में संलग्न

हूँ। एक मुसलमान की हैसियत से तुम्हें इस समय मेरे धर्मयुद्ध में बाधा देना उचित नहीं।" यह पढ़ कर हुमायूँ ग्वालियर ही में रुक गया और चित्तौड़ के युद्ध की समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगा। फिर 'जौहर' के पश्चात् हुमायूँ ने बहादुरशाह से युद्ध किया।

मेरे वर्णन का ढङ्ग इससे कुछ भिन्न है। महारानी करुणा को ज्ञात नहीं था कि बहादुरशाह ने हुमायूँ को किस प्रकार का पत्र भेजा है, अतएव वे अन्त तक हुमायूँ की प्रतीक्षा ही करती रहीं। इस प्रतीक्षा के अनिश्चित् भावों ने मेरी कविता को मनोवेगों के चित्रण करने का पर्याप्त सामान दे दिया है। आशा है, इस कल्पना शृङ्गार से विज्ञ इतिहासज्ञ रुष्ट न होंगे।

अब मेरी कविता की ओर आइए। मैंने अपनी पुस्तक में छन्द को वीर और करुणा के भावों के उपयुक्त ही चुना है। वीर और करुणा रस के भाव बड़े उन्मत्त होते हैं। उनमें दर्प और रोदन की बड़ी वेगवती शक्तियाँ छिपी हुई हैं। वे जब प्रकट होती हैं तो बड़े वेग और बड़ी शीघ्रता के साथ, पर उनका वेग उन्हें अधिक देर तक निकलने नहीं देता। शब्द निकलते हैं बड़े वेग के साथ, पर वे शब्द होते हैं बहुत ही थोड़े। प्राय देखा जाता

सर्ग-सूची

पृष्ठ

चित्तौड़ की चिता

प्रस्तावना

अरे, भारत-भू के इतिहास !
    अचल विद्युत-रेखा अनुरूप
    दिखा गौरव प्राचीन अनूप
हृदय-नभ उज्ज्वल करे स-हास   ४

चमक उठता है हृदय-प्रदेश,
    कालिमा बन जाती है श्वेत
    शब्द बिखरे होते समवेत
वन्दना करने भारत-देश   ८

उमड़ पड़ती जब सरस उमङ्ग
    तरङ्गित होकर लहर-समान
    प्रेम विधु का प्रतिबिम्ब अम्लान
झूलता है तरङ्ग के सङ्ग   १२

देश-गौरव-उल्लसित विचार
प्रेम-रस प्लावित बने स-भार,
अधिक गद्गद् हो बारम्बार
निकलते नहीं कण्ठ के द्वार १६

न जाने कितने वीर-प्रसून,
गुथे महिमा-माला में आज,
सदा रख भारत-माँ की लाज
बहा मकरन्द के सदृश खून २०

वीर भारत-जननी पद-धूल,
शीश पर सज्जित रहे समोद
खेलने को हो उनकी गोद
उन्हें श्रद्धाञ्जलि के हैं फूल २४

कामिनी-नूपुर की झङ्कार,
जहाँ होती थी बारम्बार
वहाँ पशु करते करुण पुकार
साँप भी उठते हैं फुफकार ३२

हाय ! गौरव-गर्वित चित्तौर,
हो गया दिव्य कान्ति से हीन !
हुए थे कैसे पुरुष प्रवीन,
बने थे जो जग के सिरमौर ३६

जहाँ रण का भीषण ताण्डव,
हुआ था तलवारों के साथ
हुए कितने शिशु सरल अनाथ
लड़े थे मानों कुरु-पाण्डव ४०

मेदिनी ने कर रक्त-स्नान,
न जाने कितने पाप शीश,
मृतक को दे सप्रेम आशीष,
स्वर्ग-सुख उन्हें किया था दान ४४

उजेले ने पाया तम-रूप !
प्रेम में कैसे आई भूल ?
बने किस भाँति धूल सब फूल ?
हो गया रङ्क किस तरह भूप ?

छिपा किस भाँति प्रभा-मय इन्दु,
बना बीभत्स सरस शृङ्गार !
टूट कर गिरा हृदय का हार
दृगों में क्यों छाए जल-बिन्दु ?

हाय ! कैसे उजड़ा उद्यान,
हुआ अन्तर्हित कोकिल-गान
हुआ कब सौरभ का अवसान
कहाँ छिप गया मानिनी-मान ?

जहाँ था पहिले वीर-निवास,
वहाँ बीहड़ वन का विस्तार
उल्लुओं का भीषण चीत्कार,
हिंस्र पशु का बीभत्स विलास

कामिनी-नूपुर की झङ्कार,
जहाँ होती थी बारम्बार
वहीं पशु करते करुण पुकार
साँप भी उठते हैं फुफकार

❦

हाय ! गौरव-गर्वित चित्तौर,
हो गया दिव्य कान्ति से हीन !
हुए थे कैसे पुरुष प्रवीन,
बने थे जो जग के सिरमौर

❦

जहाँ रण का भीषण ताण्डव,
हुआ था तलवारों के साथ
हुए कितने शिशु सरल अनाथ
लड़े थे मानों कुरु-पाण्डव

❦

मेदिनी ने कर रक्त स्नान,
न जाने कितने पाप शीश,
मृतक को दे सप्रेम आशीष,
स्वर्ग-सुख उन्हें किया था दान

❦

कभी चपला-सा चमक कृपाण
कण्ठ का करता आलिङ्गन
काल का निठुर सहायक बन
चूम उर, ले लेता था प्राण ४८

वीर-मस्तक पर था अङ्कित,
नारियों के कर का चन्दन,
रक्त का उस पर आच्छादन,
सान्ध्य शशि पर वारिद लोहित ५२

नेत्र थे वीरों के कुछ लाल,
श्वेत भागों पर था रण-मद
मिलन-अन्तिम में थे गद्‌गद
वही बनते थे क्रुद्ध कराल ५६

छोड कर घर सारा शृङ्गार,
कामिनी के कर का मृदु स्पर्श
वीरता का रख कर आदर्श
वीर देते रिपु को ललकार ६०

समर में राहु-केतु के वेष,
कर रहे थे सुख-शशि का ग्रास
विकट सुन रण-चण्डी का हास
काँप उठता था हृदय-प्रदेश, ६४

कडक कर प्रतिदल की हुङ्कार,
उठाती मन में भीषण भाव
वीरता का था नहीं अभाव
शीघ्र होता था युद्ध विहार ६८

कभी उठ जाती थी चीत्कार,
पुन वह बनती वाणी वीर,
तमक उठता था अरुण शरीर,
चमक उठती पैनी तलवार ७२

वीर-पत्नी के कर का पान
रँग चुका था पति के युग अधर,
लगाया उन पर रण ने रुधिर,
दूसरा पान किया क्या दान !! ७६

लालिमा-भरे लजीले गाल,
उठ गए छोड मृदुल अञ्चल
हुए स्थिर, दृग जो थे चञ्चल,
दिख पडे बिखरे-बिखरे बाल १११२

शीघ्र ही दी किङ्किणी उतार,
बाँध भी ली कटि में तलवार
छोड कर चुम्बन का उपहार
दृगों का त्यागा चञ्चल वार ११६

दृगों में यौवन का मृदु-मद,
हटा कर रक्खा रण-उन्माद
भुला मृदु वाणी, सीखा नाद,
नारि-पद तज, पाया नर-पद १२०

भुला कर सुखकर प्रेमालाप
भङ्ग कर मौन मनोहर मान
रखा निज मातृ-भूमि का मान,
हटे सारे सुख के सन्ताप १२४

हुआ रक्षित इस भाँति सदेव,
रक्त-सिञ्चित चित्तौर-प्रदेश
किन्तु जब रुठे थे विश्वेश,
और विपरीत हुआ था दैव १२८

जङ्गलों में भटके थे शूर,
घास पर वर्षों किया शयन
भिगोए अश्रु-कणों से नयन
क्लेश भी झेले थे भरपूर १३२

और नृप-मद में भरे यवन,
चढ़े आए सेना के सहित
किया चित्तौर चारु श्री-रहित
बनाए वन, थे जहाँ भवन १३६

मिटा नगरी का सब शृङ्गार,
नारियों ने पति भेजे समर,
किया फिर अपना व्रत 'जौहर'
यही था यवनों को उपहार १४०

किन्तु थे धन्य यहाँ के वीर,
देश-हित मरते थे स-विनोद
सजाते थे भारत की गोद,
कहाँ हैं वैसे अब रणधीर ? १४४

चारु 'चन्दा मामा' हँस कर,
स-मुद जाते हैं उनके पास,
बने हैं मानों उनके दास,
किन्तु आते न धरातल पर

हुआ जब नृप-शशि धीरे उदित,
बना जब रजनी के अनुकूल,
उछाले सब देवों ने फूल,
वही तारे हैं क्या सुरभित ?

व्योम में बिखरे थे ये फूल,
भूमि पर भी बिखरे थे सुमन,
देवि 'करुणा' कर उनका चयन,
गूँथना भी जाती थी भूल

नाथ के चरणों में वह हार,
चाहती थी करना सज्जित,
किन्तु नव परिणीता लज्जित,
सहन करती थी व्रीड़ा भार

रात्रि के या निकले अङ्कुर
सींचता उनको माली-इन्दु
किरण-धारा के बहते विन्दु,
खिल गया है उनसे नभ-उर २६

देव हैं या गगनस्थ स-हास,
और करते हैं व्योम-विहार,
देखते हैं जग के व्यापार,
जला कर शशि का शुभ्र प्रकाश २७

बने अथवा ये ऊँचे धाम,
जहाँ निद्रा करती है वास,
वहीं से आती सबके पास,
गूँथ कर स्वप्न-हार अभिराम २८

अरे ये सुन्दर तारे-बाल,
खेलते हैं नभ की मृदु गोद,
बुला 'चन्दा-मामा' स-विनोद,
सदा स-विराम फुलाते गाल २८

हिला देता था मन्द समीर,
श्याम अलकावलि के कुछ बाल,
कुसुम-से मृदु कपोल थे लाल
यही दिखलाता झीना चीर ६४

✤

कभी यदि हिले वृक्ष के पात,
सोचती—"आए जीवन-नाथ'
देखती थी लज्जा के साथ
अरुण हो जाता था सब गात ६८

✤

फेंक कर तिरछी-सी चितवन,
हटा कर कुछ अपना अञ्चल,
देखती थी होकर अविचल,
शीघ्र बिखरा अञ्जलि के सुमन ७२

✤

कभी धीरे-धीरे ले सुमन,
बनाती थी छोटा-सा हार
न जाने क्या-क्या सरस विचार
फूल के बदले करती ग्रथन ७६

✤

हाथ में लिया एक लघु फूल,
गूँथना चाहा उसे स-चाव
किन्तु आया लज्जा का भाव,
गिरा वह, और लग गई धूल ४८

चौंक कर लिया दूसरा सुमन,
लगाया लोचन से सविराम,
किन्तु क्या सोच, लिया फिर थाम,
हुआ उसका भी वही पतन ५२

नयन-तट पर थी लाज-हिलोर,
अधर-पट भी थे किञ्चित मुक्त,
भाल था स्वेद-बिन्दु से युक्त,
देखते थे दृग पग की ओर ५६

लोचनों पर था मुग्धा-भाव,
ओंठ में छिपी हुई मुस्कान
लगा था यद्यपि पति का ध्यान
किन्तु थे लज्जा के सब हाव ६०

हिला देता था मन्द समीर,
श्याम अलकावलि के कुछ बाल,
कुसुम-से मृदु कपोल थे लाल
यही दिखलाता झीना चीर ६४

कभी यदि हिले वृक्ष के पात,
सोचती—"आए जीवन-नाथ'
देखती थी लज्जा के साथ
अरुण हो जाता था सब गात ६८

फेंक कर तिरछी-सी चितवन,
हटा कर कुछ अपना अञ्चल,
देखती थी होकर अविचल,
शीघ्र बिखरा अञ्जलि के सुमन ७२

कभी धीरे-धीरे ले सुमन,
बनाती थी छोटा-सा हार
न जाने क्या-क्या सरस विचार
फूल के बदले करती ग्रथन ७६

सजाए कुछ गुलाब के फूल,
किन्तु फिर उनको दिया बिखेर,
प्रकृति को दोष दिया, मुख फेर,
लगाए जिसने उनमें शूल ८०

भावनाओं का यह मिश्रण,
हो रहा था मन में प्रति-पल,
प्रतीक्षा से था हृदय विकल
युगों-सा जाता था प्रति-क्षण ८४

प्रतीक्षा का था ओर न छोर,
उमड़ पड़ता था कुछ उल्लास,
किन्तु दृग थे लज्जा के दास
लगे थे वे भी पथ की ओर ८८

किन्तु पीछे से कर-पल्लव,
उठे, जिन पर प्रस्वेद की बूँद,
लिए करुणा के युग-दृग मूँद,
यही था अभिनय क्या अभिनव! ९२

ओंठ पर आई मृदु मुस्कान,
हाथ लज्जा से झुके समोद,
वचन भी मुख में रुके समोद,
कपोलों पर था ऊषा-स्थान

मिले कर-दृग में सहित-दुकूल,
कपोलाधर का हुआ मिलन
खिले तब दोनों वदन सुमन
हुए लज्जित उपवन के फूल

मिले थे प्रेमी युगल किशोर,
बही थी प्रेम सुधा की धार,
इन्दु की सुधा बनी निस्सार
वहीं था झाँक रहा शशि-चोर

अधर में पाया था मधु-सार,
करों में कल्प-लता आनन्द
वदन ही में पाया था चन्द्र
मिलन में नन्दन का सुविहार

विलग हो गए लजीले वदन,
किन्तु कर का था अब तक मिलन,
यदपि मुख से न निकाले वचन,
किन्तु पाया था स्वर्ग-सदन ११२

उठ गए करुणा के मृदु हाथ,
लिए फूलों की छोटी माल,
कण्ठ में पति के दी वह डाल,
बड़ी अनुराग-रीति के साथ ११६

लोचनों का था मिलन-समय
हुए दोनों के कर सम्बद्ध
हो गए बाहु-पाश में बद्ध
प्रेम-लीला का था अभिनय !! १२०

तृतीय सर्ग

शान्ति के दिन जाते हैं बीत,
न जाते लगती कुछ भी देर,
दिनों के हो जाते हैं फेर,
लीन होते विस्मृति में गीत ४

हरे पल्लव हो जाते पीत
उष का हो जाता है अन्त
मधु मुख में आते हैं दन्त
शान्त मन हो जाता भयभीत ८

जरावस्था की विषम हिलोर,
बहा देती है यौवन-रङ्ग
रुचिर रँगवाले विविध विहङ्ग
भागते नीड़ अन्य की ओर १२

ग्रीष्म का भीषण प्रखर प्रताप,
जलाता सौरभवान वसन्त
सुछवि का हो जाता है अन्त,
पुण्य हट, आ जाता है पाप १६

यही जग मकड़ी-जाल स्वरूप,
खिंचे नीरस विषयों के तार
शीघ्र ले चक्र-व्यूह आकार,
रजत किरणों का रखते रूप २०

अरे, यह क्षणभङ्गुर संसार,
पलटता है पट विविध प्रकार
वृद्ध में परिवर्त्तित सुकुमार—
शीघ्र कर, रखता वस्तु असार २४

शीघ्र सित होते काले केश,
प्रेम में आ जाती है ग्लानि,
प्रणय की हो जाती है हानि,
शीघ्र शिशु रखता जर्जर-वेश २८

देख निस्तब्ध हुए सब वीर,
अन्त में थी राणा संग्राम,
प्रेम से ले 'हर' 'हर' का नाम,
बोलने लगे हृदय रख धीर ६४

यवन बाबर ने यह फरमान
भेज कर दी है यह ललकार—
'जङ्ग को हो जाओ तैयार
अगर तुम बनते हो इन्सान' ६८

लिखा है "रक्खेंगे इस्लाम,
काफिरों को दोजख में भेज,
सुना है अगर नाम चङ्गेज
खुदा को मानो, छोड़ो राम ७२

"अगर कुछ हिम्मत का है नाम,
तेग़ लो कर लो आकर जङ्ग
नहीं तो रख गुलाम का ढङ्ग,
खुदा का ले लो नेक कलाम" ७६

किन्तु कुछ ही दिन में अति शोक—
छा गया नगरी में सत्वर,
पुरजनों में भी आया डर,
मिट गया सुख-शशि का आलोक

सभी थे भारी चिन्ता ग्रस्त,
हृदय क्षण-क्षण होते कम्पित,
हो रहे थे पुरजन शङ्कित
हृदय में बने पूर्णत त्रस्त

उदासी छाई थी पुर में,
बहा था अविरत करुणा-नद
सुखों के साज बने दुखप्रद,
छा गई कातरता उर में

राज-दरबार बना था मूक,
वीर सग्राम हुए थे मौन
बोल सकता था सैनिक कौन ?
सभी के हृदय उठी थी हूक

चतुर्थ सर्ग

न जाने बीता कितना काल,
गई कितनी रातें भी बीत,
ग्रीष्म-ऋतु बीते पावस-शीत
बहुत से बीते प्रात काल ४

उगे तारे भी कितनी बार,
चन्द्र ने चूमा नभ सौ बार,
उषा ने किया अरुण शृङ्गार
सुमन ने लिए कई अवतार ८

आम्र ने बौर अनेकों बार
सजा कर किया भ्रमर-आह्वान
कोकिलाओं ने गाकर गान
लिया बनवास अनेकों बार १२

घूम कर काल-चक्र अविराम,
बहुत करता था परिवर्त्तन
पर न आए करुणा के घन
हृदय-आधार वीर संग्राम

युद्ध में लड़े सकौशल वीर,
दिखाया राणा ने उत्कर्ष
वीरता का रक्खा आदर्श
रक्त से भरा समस्त शरीर

यदपि राणा का रण-कौशल
युद्ध में दर्शनीय था, हाय !
किन्तु कोई भी था न उपाय !!
राजपूतों का हारा दल

क्योंकि थे यवन अमित सख्यक,
और थे आर्य बहुत ही
कहाँ सकते थे रण
शौर्य में थे पर वे

शीघ्र घायल होकर संग्राम,
शिविर में लौट गए असहाय
जीत का कोई था न उपाय
किया बाबर ने रण में नाम

विजय थी यवनों ही की ओर,
गए थे राजपूत सब हार
खुला था उन्हें स्वर्ग का द्वार
यवन का बढ़ा भूमि पर जोर

हुआ करुणा का भाग्य विफल,
सभी टूटे आशा के तार,
हुए अति मलिन सभी शृङ्गार
न पड़ती थी छिन भर भी कल

न पाया जब कुछ भी सम्वाद
हुआ करुणा का व्यथित हृदय,
बढ़ा द्रुत ही क्षण मन में भय,
विरह से हुआ विषम उन्माद

भाग्य था करुणा के प्रतिकूल,
हो गया हृदय अतीव अशान्त
हुआ हा ! राणा का प्राणान्त
हो गई ईश्वर की क्या भूल ! ४८

*

नाश का जुड़ा सभी सामान,
हुआ किस भाँति भाग्य का फेर
दुखों ने लिया राज्य को घेर
हो गया राज्योन्नति अवसान ५२

*

हो गया नृप-शशि निष्प्रभ अस्त,
अँधेरा हुआ राज्य-प्रासाद
छा गया चारों ओर विषाद,
हो गए राज्य-अङ्ग सब व्यस्त ५६

*

हृदय-वेधक यह भारी क्लेश,
सहे कैसे करुणा करुणेश !
रखे कैसे वह विधवा-वेश ?
बिखर जावेंगे उसके केश ६०

पञ्चम सर्ग

महल का खुला हुआ था द्वार,
रहा था उसमें चमक प्रकाश,
वहीं करुणा थी परम उदास,
हृदय में उठते विविध विचार ४

बना अपना मलीन वर वेष,
दिए थे त्याग सभी श्रृङ्गार
दृगों पर अञ्जन भी था भार,
पुष्प से थे न सँवारे केश ८

अहर्निश प्रभु-आराधन-लीन,
यही ईश्वर से करती विनय—
"नाथ! स्वामी जी की हो विजय
राज्य में वे ही हों स्वाधीन १२

अगर रिपु-सेना ही है अमित,
प्रभो ! फिर ऐसा रचना ढङ्ग
शत्रु-सेना हो जावे भङ्ग,
वज्र तव अरि पर ही हो पतित १६

अगर घूमे पति पर तलवार,
फूल-सी रहे कवच पर भूल,
तुम्हारी कृपा रहे अनुकूल,
बचा जावें वे तीखे वार २०

समर का जर हो पूर्ण वेग,
और तीरों की हो बोछार,
वायु से टूटे शर की धार,
बोथले हो भू गिरें सवेग २४

तुम्हारी कृपा-कोर का छत्र
सदा दे उन पर छाया डाल,
रक्त हो उनको चन्दन लाल
रण स्थल में घूमें सर्वत्र २८

काल-सी उनकी हो तलवार,
शत्रु की छाती को दे चीर
सहायक रहें हमारे वीर
करें वे भी रिपु-ओर प्रहार ३२

✻

कुशल से जो आवेंगे नाथ
उन्हें पूजूँगी बड़े सप्रेम
प्रभो ! वे रहें सदैव सक्षेम
और निर्भयता के भी साथ ३६

✻

सजा दूँगी चित्तौड़ प्रदेश
सेवकों को देकर आदेश,
प्रभो ! रथ पर निज मङ्गल वेश,
तुम्हारी पूजा करूँ विशेष ४०

✻

उठेगा दल में हर्ष अपार,
उसी में रिपु का हाहाकार,
शीघ्र मिल आवेगा एक बार,
तुम्हारा भी तो जय-जयकार ४४

✻

जानते हो तुम सारे काज,
तुम्हें क्या समझाऊँ जगदीश
झुकाती बार-बार हूँ शीश
शीघ्र रख लेना मेरी लाज ४८

हर्ष से आ जावें पति भवन,
आर्य-वीरों को लेकर साथ,
उसी क्षण हे अनन्त के नाथ !
तुम्हारा होगा आराधन" ५२

इसी विधि करती करुणा विनय,
आँख से गिरती थी जल-धार
सुनाती अपने करुण विचार—
"नाथ का पथ हो मङ्गलमय" ५६

अचानक दासी आई एक,
बहाती आँसू थी अविराम
शब्द जो कहती थी सविराम
प्रकम्पित होता था प्रत्येक ६०

कभी कर उठती थी चीत्कार,
कभी हो गया कण्ठ था रुद्ध
शब्द थे नहीं निकलते शुद्ध,
जरा का था शब्दों पर भार ६४

रुदन करती थी कभी सशोक
निकल जाती थी मुख से आह
आँख में पानी, मन में दाह
सिसकियाँ भी न सकी थी रोक ६८

गिर पड़ा भू पर वृद्ध शरीर,
फैल भी गए भूमि पर केश,
हो गया मलिन जरामय वेश
हो गया अस्त-व्यस्त सब चीर ७२

चौंक कर करुणा हुई सभीत,
हो गए विस्फारित युग नैन,
न निकले सहसा मुख से बैन
धैर्य को लिया शोक ने जीत ७६

अमङ्गल का था मन में चित्र,
वदन पर हुआ वही अङ्कित
हृदय जो रहता था शङ्कित
वही अस्थिर हो उठा विचित्र ८०

उसी वृद्धा का थामे हाथ,
शीघ्र बोली वह कातर वचन—
"कहाँ हैं मेरे जीवन धन !
कहाँ हैं मेरे जीवन-नाथ !! ८४

युद्ध में किसकी रही विजय,
काम आए कितने वर वीर
कहाँ मेरे प्रियतम रणधीर ?
कहाँ करुणा के करुणामय !! ८८

शीघ्र कह दे मङ्गल-सम्वाद,
हृदय को दे दे थोड़ी शान्ति
हटा दे मन की सारी भ्रान्ति,
सुना दे प्रियतम का जयवाद ' ९२

वचन सुन वृद्धा रोई और,
अधिक हो गए स्पष्ट मुख-भाव
अधिक उमडा आँसू का स्राव
कहा रुक रुक कर हा चि तौ र ९६

सिसकियाँ भर कर बोली, "हाय !
महारानी ! हो गया विनाश,
हो गया सभी सैन्य का नाश
हो गई मातृभूमि असहाय १००

युद्ध में राणा ने ललकार,
किया विचलित यवनों का दल,
किन्तु घावों से हो निर्बल,
तज दिया यह नश्वर संसार !" १०४

इन्हीं अन्तिम शब्दों का नाद,
बन गया प्रलय-काल का घोष,
काल का था जीवान्तक रोष
मृत्यु हुङ्कार बना सम्वाद १०८

गिर पड़ी करुणा लता समान,
नहीं था जिसको कुछ आधार
टूट कर बिखर गया वह हार
नाथ-हित गूँथा जो सुख मान ११२

हो गई क्षण में पूर्ण अचेत,
न निकला मुख से कोई वचन,
एक चीत्कार, एक ही ध्वनि,
उसी से गूँजा सभी निकेत ११६

गाल पर बिखर गए सब केश,
रखे थे अञ्जलि में जो फूल,
गिर पड़े, उनमें बिखरा धूल
बन गया अविदित विधवा-वेश १२०

अश्रु की एक न निकली बूँद,
चुक गया था आँसू का कोष,
किया शोकानल ने था शोष
लिए करुणा ने लोचन मूँद १२४

षष्टम सर्ग

गगन में ऊँचे चढ़े मयङ्क,
निशा ने रचा सभी श्रृङ्गार,
व्योम में करने लगी विहार,
सजाया तारों से निज अङ्क ४

चाँदनी भी फैली सब ओर,
लता, सुमनों ने त्याग सुवास
पवन में भूला मन्द सहास
न उनमें था अब मधुकर चोर ८

चाँदनी हँसती थी सविनोद,
लता-पल्लव देते थे ताल
नाचते थे प्रसून मृदु-बाल
सजा कर मॉन्लतिका की गोद १२

सरोवर में जल-केलि-विलास,
तरङ्गों से करता था चन्द
लहर से लिपट-लिपट आनन्द—
ले रहा था वह समुद, सहास

मनोहर नव उपवन के बीच,
शयित थी करुणा सज्ञा-हीन
और थी मङ्गल-वेश विहीन
भाग्य ने मानों ली छबि खींच

कुञ्ज के मध्य लता के पास,
जहाँ था मधुर सुमन का वास
जहाँ पड़ता था चन्द्र-प्रकाश,
वहीं करुणा का था कच-पाश

चन्द्र का छनता हुआ प्रकाश,
कुञ्ज-लतिका में से आगत,
कर रहा था कच का स्वागत,
खेलता मुख पर वही उदास

पवन भी हिला-हिला कर बाल,
उठाने का करता था यत्न
गिरा क्यों था यह नारी-रत्न
जगाने की चलता था चाल ३२

शोक रेखाओं से अङ्कित,
हुआ था करुणा का वर वदन
रुदन के समय अश्रु के कन
कपोलों पर अब भी थे पतित ३६

लगी जब शीतल-मन्द समीर,
घ्राण-गोचर जब हुई सुवास
चली कुछ वेग सहित तब साँस
हिला करुणा का मृदुल शरीर ४०

ओठ भी धीरे से कुछ हिले,
आँख की दृष्टि उठी नभ ओर,
अचानक स्मृति की उठी हिलोर
पुराने दुख-विचार आ मिले ४४

हुआ जब करुणा को कुछ चेत,
हृदय हो गया हजारों खण्ड
उठा दुख मन में परम प्रचण्ड
देह की कान्ति हुई सब श्वेत

❦

हृदय से उमड़ पड़ा उछ्वास,
नेत्र में अन्धकार था आह !
चला आँसू का अमित प्रवाह !
तनिक रुक कर ओठों के पास

❦

वायु में गूँजा हाहाकार,
सिसकियों की आई प्रतिध्वनि
आह भर-भर कर मृगलोचनि
भूमि पर उठ बैठी एक बार

❦

गए सब बिखर मनोहर बाल
आह ने जला दिए कुछ सुमन
आँख पर रख कर अञ्चल-वसन
जानु पर झुका दिया निज भाल

❦

उठा करुणा का करुण विलाप
दिशाओं में भी हुआ रुदन
वायु ने उसका करके वहन
लता को हिला, दिया सन्ताप ६४

अश्रुओं के छाए जब घन,
झुक गए नीचे को लोचन,
नहीं कर सकते भार वहन,
खिंच गया शोक-प्रज्वलित मन ६८

उठे नभ ओर नयन जल-साथ
हुआ कम्पित शरीर मृतप्राय
सिसकियाँ लेकर बोली, "हाय !
कहाँ हो हे करुणा के नाथ !! ७२

हृदय-मन्दिर के देव अनूप,
कहाँ हो मेरे जीवन-धन
आह ! यह सूना है उपवन
कहाँ हो मेरे प्राण स्वरूप !! ७६

न कर पाई अन्तिम दर्शन,
रूठ कर चले गए क्या हाय !
न कर पाई मैं तनिक उपाय !
रोकने का हे जीवन-धन !! ८०

सजाया था मैंने उपवन,
सदा करने को समुद विहार
छोड कर चले गए ससार,
हो गए दासी से क्या विमन ? ८४

हो गया था कोई अपराध,
हो गई थी यदि मुझसे भूल,
क्षमा करते होकर अनुकूल
वियोगाम्बुधि है नाथ ! अगाध ८८

यही है प्रथम-मिलन का स्थान,
यहाँ पर तुम आए थे नाथ !
बडी ही उत्सुकता के साथ,
छुडाने मेरा मधुमय मान ९२

प्राण लेता है अब वह मान,
नाथ ! मैं हाय !! गई क्यों रूठ,
मानना मान सदा वह झूठ,
रूठना मत मेरे भगवान ९६

छिप थे पीछे से दृग बन्द,
नाथ ! मेरे तुमने आकर,
न बोली मैं कुछ सकुचा कर,
दिया था मुझे मिलापानन्द १००

कहाँ हो मेरे हृदय-प्रकाश,
बहाते हैं आँसू युग-दृग
तुम्हारे धोती इनसे पग,
अगर होते तुम मेरे पास १०४

प्रेम-आँसू भर होती मौन,
पोंछते थे जतला कर प्यार
उमड़ती है आँसू की धार,
पोंछने अब आवेगा कौन ? १०८

फूल लेकर गूँथी थी माल,
चाव से पहिनाई थी नाथ,
बड़ी ही उत्सुकता के साथ,
मनोरम था वह रजनी-काल ११२

वही रजनी भी है इस समय,
खिले भी तो हैं सुन्दर सुमन
उपस्थित भी है मेरा तन
किन्तु है कहाँ आपका प्रणय ? ११६

रजनि का कैसा था अभिनय
और शोभित भी थे रजनीश
फूल हिल, देते थे आशीष
प्रकृति का कैसा था वह समय ! १२०

हो गया हाय ! प्रणय का लोप,
नहीं हैं मेरे करुणामय
इसी उपवन में लगता भय,
हुआ है वाम देव का कोप !! १२४

अरे शशि के हे निठुर प्रकाश !
  मुझे भी ले किरणों से खींच
  स्वर्ग में प्रियतमाङ्क के बीच—
मुझे बिठला दे आज सहास १२८

मुझे प्रभु ! कलिका रचो उदास
  जहाँ खिल कर दुख से निष्प्रभ,
  हृदय-भावों का सब सौरभ
भेज दूँ मैं प्रियतम के पास १३२

बना दो अथवा मुझको लहर,
  उमड, तट पर ठोकर खाकर,
  नाम प्रियतम का गा-गाकर,
नष्ट हो जाऊँ पत्थर पर १३६

बना दो निशा मुझे हे राम !
  जहाँ नभ में खोजूँ मैं नाथ !
  नाम-स्मृति लेकर सुख के साथ,
गूँथ डालूँ तारों से नाम १४०

बनूँ मैं अथवा वारि-विलास,
सूर्य के उष्ण ताप से जल,
सुखा डालूँ मैं तन कोमल
वाष्प बन, उड़ जाऊँ प्रिय-पास

अरे ए चन्द्र अरे निष्ठुर !
घूमता सभी विश्व में रोज
कहीं पाई प्रियतम की खोज,
बता, वे बसते हैं किस पुर ?

नहीं, यह सारा जग है झूठ,
खेलते आँख-मिचौनी नाथ !
अभी आते होंगे स्मिति साथ,
तनिक भी वे न गए हैं रूठ

हाय ! दुखिनी के हे अवलम्ब !
विश्व-जननी ! पहुँचे किस ओर,
कहाँ, की किस पर करुणा-कोर
उन्हें दे दो सुधि मेरी अम्ब !

अरे, हो गई बहुत ही देर,
न आए अब तक जीवन-धन,
किया क्या सचमुच स्वर्ग-गमन,
आँख क्या मुझसे ली है फेर ? १६०

अगर नन्दन-कानन के फूल,
रिझाते हैं उनका तन-मन
सजाऊँगी उनसे उपवन
किन्तु वे हो जावें अनुकूल !! १६४

भूल कर आ जावें एक बार,
मनाऊँगी अपने हृदयेश
बना कर अपना मालिनि वेश,
भेंट में दे दूँगी यह हार १६८

अभी वे पूछेंगे परिचय,
कहूँगी ये—"करुणा"* के फूल
न प्यारे ! इनको जाना भूल,
करो लो, इनको मदनमय १७२

---

* करुणा = (१) रानी का नाम (२) एक प्रकार का पुष्प

मुझे लख कर भी यदि प्राणेश,
अपरिचित-पट में जावें भूल
कहूँगी—"यदि पहिचाने फूल
छोड दूँ अपना मालिनि-वेश" १७६

किन्तु वे आवेंगे क्यों हाय !
गए हैं मुझको हा ! हा ! भूल !!
फूल ये हैं न, हृदय के शूल !
करूँ जग-जननी ! कौन उपाय ? १८०

हाय ! अब तो आओ हे नाथ !
विलखती दासी है हो विकल,
तुम्हारे बिना जगत है विफल,
सुनाऊँ किसको दुख की गाथ ?" १८४

सिसकियाँ ले-ले, भर-भर आह,
कर रही थी वह करुण विलाप
हृदय में बढ़ता था सन्ताप
हो रही थी भीषण उर दाह १८८

दिशाओं में भी हुआ रुदन,
हो गई करुणा लज्जाहीन
हो गया उपवन भी स्वरहीन
पर न आए करुणा के घन १६२

सप्तम सर्ग

बह रही थी दृग से जल-धार,
शोक में करुणा थी जब मग्न
ध्यान में पति के थी संलग्न
बीतते थे रोते जब वार ४

卐

रात्रि में तारों पर थी दृष्टि,
दिवस में रहती सदा उदास
सदा लेती थी उष्णोच्छ्वास
शोक-भावों को होती सृष्टि ८

卐

हो गई थीं आँखें-युग लाल,
भीगते जल से कलित कपोल,
निकलता था रुक-रुक कर बोल
बीतता था जब दुख में काल १२

卐

उस समय कुछ आशा की कोर,
भाग्य में निकली एक सहास,
कालिमा में कुछ हुआ प्रकाश,
नेत्र चमके आशा की ओर १६

आँख में करुणा-जल के सङ्ग,
हर्ष के बिन्दु समाए सरस,'
विरस ओष्ठों पर पहुँचा सु-रस,
शुष्क अङ्गों में आया रङ्ग २०

फलित करुणा की सुन्दर गोद,
भर गई शिशु से परम पुनीत
रानियों ने गाए शुभ गीत
उठ गया चारों ओर प्रमोद २४

वीर समाम मृत्यु का शोक,
हट गया—सुन कर यह सम्वाद
हुआ सब ओर परम आह्लाद,
हुआ फिर सुख-रवि का आलोक २८

सुकोमल थे छोटे से हाथ,
लालिमा का था मुख में वास
जब कभी होता वदन सहास
ललिमा बढ़ती स्मिति के साथ ४८

न स्थिर होते रहते चञ्चल,
सदा शिशु के पग कर अ-म्लान
किया करता था पितु-आह्वान,
उठा नभ ओर हाथ कोमल ५२

सदा करता था लीला ललित,
मातृ मन में लाता सन्तोष
बढ़ाता था नित सुख का कोष,
सुमन सा खिलता था वह फलित ५६

अष्टम सर्ग

पुत्र-वपोत्सव था मङ्गल,
उल्लसित था सुख से रनिवास
गूँजती बोली मधुर सहास,
बन गया सुख का युग प्रतिपल ४

बन गई थी जब करुणा मुदित,
हो रही थी शिशु पर बलिहार
डालती थी हाथों के हार
शान्ति-शशि मन में था जब उदित ८

देखती थी शिशु-छवि अविराम,
खिलाती थी वह सुन्दर खेल,
बढ़ाती पुत्र-स्नेह की बेल,
मधुर उससे कहलाती नाम १२

प्रेम का वह प्यारा उपहार,
 सहारा जीवन का अभिराम,
 "उदैछीं" कहता था निज नाम
ताल दे कर जतला कर प्यार १६

卐

कभी कहता था "माँ, जब लन,
 कलूँगा लेकल मैं तलवाल
 तुमें मैं दूँगा हीला-लाल
मआँलानी जाओगी बन २०

卐

"अबी तुम छोती लानी ओ न ?
 तुमें मैं पैनाऊँगा मुकुत
 पाछ जब ओगी छैना बउत
कलेगा बलावली पिल कौन ?" २४

卐

यही होता था बाल्य-विलास,
 मातृ-मन में था नव उल्लास
 बुद्धि का करती निमल विकास
सदा रख शिशु वह अपने पास २८

卐

किन्तु कुछ दिवसों में सम्वाद,
यही आया मन्त्री के पास
राज्य का होता जाता नाश
सेवकों में है राज्योन्माद　३२

नहीं है कुछ प्रबन्ध का नाम
राज्य में है अशान्ति सब ओर,
हो रहे सेवक स्वार्थी, चोर,
राज्य का बिगड़ गया सब काम　३६

गदर मचने का बढ़ता डर,
बन रहे बागी सूबेदार,
हो रहे लड़ने को तैयार
न देता है कोई भी कर　४०

डूबता है राजा का नाम,
बिगड़ती है सुराज्य की नीति
परस्पर रही न बिलकुल प्रीति
बुरा होता जाता परिणाम　४४

उठ रहा दीनों का स्वर करुण,
हो रहे भारी अत्याचार
सभी करते हैं धन को प्यार
भूमि वध से होती है अरुण ४८

राज्य की दशा देख कर हाय !
आ रहा चढ़ा बहादुर शाह
राज्य लेने की उसको चाह—
कौन सा जावे किया उपाय ? ५२

हाय ! लुट जावेगा चित्तोर
सभी वैभव अब होगा नष्ट
रानियों को होगा अब कष्ट
यही बातें होतीं सब ठौर ५६

शीघ्र दो रानी को अब खबर,
करें वे कार्य शीघ्र अनुकूल,
करोगे यदि इसमें कुछ भूल,
उठेगी बस विषय की लहर ६०

शीघ्र करना है बहुत उपाय,
बहादुर शाह लिए दल-यवन,
करेगा अपने यश का पतन
हरेगा आर्य-नारि-समुदाय ६४

सुना जब करुणा ने सम्वाद,
उठी करुणा की भारी लहर
क्रोध से काँप गई थर-थर,
आ गई पति की भी कुछ याद ६८

क्रोध-करुणा का था मिश्रण,
उधर था राज्य, इधर पति-ध्यान
हो गई क्रुद्ध, हो गई म्लान,
रोष से जली, गिरा जल-कण ७२

याद कर पति की, बोली वचन,
"तुम्हारी अनुपस्थिति में नाथ !
हो रही प्रजा मलीन अनाथ ।
कहाँ हो मेरे जीवन-धन !! ७६

चित्तौड़ की चिता

हो रहा है क्या अब विप्लव,
आर्त की उठती करुण-पुकार
तुम्हारे बिना राज्य का भार,
उठे कैसे हे प्रियतम अब !

देखने आओ, शिशु नृप यदि [illegible],
शीघ्र ही आओ छुप [illegible],
देख लो भीषण अन्धकार,
देख लो भाग्य दीप के [illegible]

शीघ्र ही ले विवेक आधार,
शीघ्र रख अपने मन में [illegible],
धैर्य ले, खोकर मन की [illegible],
जोड़ कर आशाओं के तार

बुलाया मन्त्री को तत्काल,
कहा फिर जतला कर [illegible],
उसे जिससे हो शुद्ध [illegible],
आँख कर तत्क्षण अपनी [illegible]

"कहो ! मैं क्या सुनती हूँ आज,
राज्य में होता हाहाकार
दीन पर होता अत्याचार
जा रही अबलाओं की लाज

यही क्या राज्य कार्य का ध्यान,
यही क्या राज्य-कार्य का भार
यही क्या देते प्रत्युपकार
यही क्या राजपूत-अभिमान ?

दीन का सुन कर हाहाकार,
क्यों न ये फट जाते हैं कान ?
यही क्या रखा प्रजा का ध्यान ?
अरे, सौ बार तुम्हें धिक्कार

यही क्या राजा का है ऋण,
यही क्या राज्य-कार्य है ज्ञात ?
महल में पड़े हुए दिन रात—
तोड़ते नारि-सदृश हो तृण ?

सैन्य की सख्या है क्या ज्ञात,
और कितने हैं गढ़-रक्षक ?
कहाँ हैं सब सेना-नायक ?
क्यों न करते हो मुझसे बात ? ११२

यही क्या राजाज्ञा पालन,
यही क्या मन्त्री का है धर्म ?
यही क्या यशदायक है कर्म ?
मौन क्यों गए आज तुम बन ?" ११६

कहा मन्त्री ने निज कर जोड़,
"महारानी ! मैं हूँ निर्दोष,
शून्य हो गया राज्य का कोष,
कार्य भी दिया सभों ने छोड़ १२०

न कोई भी करता है काम,
सभी तृष्णा के हैं अब दास,
नहीं हैं जब राजा भी पास,
भला, क्यों अच्छा हो परिणाम ? १२४

सभी बनते हैं स्वयं स्वतन्त्र,
राज्य-सेवा अब मानें पाप,
छिपा राणा का सभी प्रताप,
'स्वार्थ-सेवा' है मन का मन्त्र १२८

शक्ति का रहा न अब सञ्चय,
बना हूँ मैं अतिशय निर्बल,
सभी करते हैं मुझसे छल,
मिल चुका इसका है परिचय १३२

न धन है और न कुछ सन्मान,
सभी देते हैं मुझको दोष,
किया करते हैं मुझ पर रोष,
नित्य ही करते हैं अपमान १३६

राज्य-सेना का सब सङ्गठन,
हो चुका है अब नष्ट-प्राय,
यही मुझको दिखता अभिप्राय,
सभी जावेंगे बागी बन १४०

आह ! होता है जब यों पतन,
आ रहा यवन बहादुरशाह
चाहता करना राज्य तबाह,
इसी पर तो है उसका मन १४४

'न सेना है अपनी पर्याप्त,
यवन-सेना है आह ! अपार
फिर न क्यों हम जावेंगे हार ?'
भाव है यह नगरी में व्याप्त १४८

कीजिए आज्ञा मुझे प्रदान,
शीघ्र मैं उसको कर दूँ आज !
बचा लें मातृ-भूमि की लाज,
प्रजा-रक्षा पर भी दें ध्यान !" १५२

सुने जब करुणा ने ये वचन,
मौन बन कर नीचे को देख—
भूमि पर नख से खींची रेख,
उठाए फिर अपने लोचन १५६

उस समय उन लोचन में आह !
दिख पडा करुणा का कुछ रङ्ग,
देख पाते यदि उन्हें कुरङ्ग,
शीघ्र हो उठता मन में दाह १६०

श्याम, मृदु श्वेत और कुछ लाल,
दिख पड़े अश्रु-विन्दु के साथ,
हुए थे मानों नयन सनाथ—
त्रिवेणी सङ्गम से उस काल १६४

कहा करुणा ने लेकर आह,
"मन्त्रि ! मैं क्या आज्ञा दूँ आज ?
अकेले कैसे रख लूँ लाज
किसी को जब न रही परवाह ? १६८

शक्ति का पूरा हुआ अभाव,
मातृ-भू का न रहा जब ध्यान
हृदय से गया हृदय का मान,
रहा जब नहीं युद्ध का चाव ! १७२

तुम्हीं बोलो फिर क्या कर्तव्य,
हमारा है मन्त्री ! इस काल ?
चली है यवनों ने भी चाल,
बढ़े ऊँचे उनके मन्तव्य !!

ठहर जाओ, मैं देकर ध्यान,
खूब सोचूँगी अब यह बात
जाग कर सारी लम्बी रात
करूँगी चिन्ता का अवसान

स्वयं तुम भी जाकर इस काल,
शान्ति की करो घोषणा आज,
सावधानी से हो सब काज
कहूँ जो, उसे करो तत्काल

अभी जाती हूँ शयनागार—
सोचने, ले ईश्वर का नाम,
सदा शुभ ही होगा परिणाम,
करो राणा का जय-जयकार !"

नवम सर्ग

निशा का होता था अवसान,
    लालिमा फैली प्राची-ओर,
    उजेले की आ गई हिलोर,
हो गए रजनी-पति भी म्लान ४

हो रहे थे क्षण-क्षण निस्तेज,
    बन गए हों मानों कपूर,
    हो गई थी द्युति उनसे दूर,
बने थे श्वेताङ्गी अङ्गरेज ८

चन्द्र की समता भी उस समय,
    कर रहा था करुणा का तन,
    नेत्र का था भू ओर पतन,
हृदय में था विचार-सञ्चय १२

छोड़ कर बार-बार उच्छ्वास,
सोचती थीं वे मन ही मन,
लोचनों में था अवगुण्ठन,
किन्तु था भ्रू का विषम विलास

पड़ गए थे भौंहों पर बल,
अधर-पुट में भी थी फड़कन,
विविध भावों का था मिश्रण,
न छिन भी पड़ती थी कुछ कल,

सोच कर लिखा पत्र फिर एक,
बड़ी ही अस्थिरता के साथ,
स्वेद से सज्जित था मृदु माथ
किन्तु अस्थिर मन था सविवेक

कभी मुख पर आता था क्रोध,
कभी आँखों में करुणा-भाव,
कभी लोचन में आँसू स्राव,
कभी वाणी का था अवरोध!

कभी आशा का क्षीण प्रकाश—
लोचनों को करता उज्ज्वल,
निराशा होती कभी प्रबल,
म्लान हो जाता वदन स-हास

इस तरह भाँति-भाँति के भाव,
वदन-पट पर होते अङ्कित,
कभी सोल्लास, कभी शङ्कित,
कभी नैराश्य-भाव के हाव

भाव-रङ्गों का था मिश्रण,
हृदय-नभ में खिंचता सुर-चाप,
किया मन ही मन करुण-प्रलाप,
क्रोध-करुणा का था यह रण

बुलाया राजदूत फिर एक,
कहा अपना ऊँचा कर चोप,
स्मरण कर मृदु शब्दों का कोप,
प्रेम से रँगा वाक्य प्रत्येक

"शीघ्र ही दिल्ली-पति के पास,
अभी जाकर तुम करो प्रणाम,
वहाँ लेकर तुम मेरा नाम,
कहो निज मातृ-भूमि का त्रास ४८

और तुम दे देना यह पत्र,
हुमायूँ शहन्शाह को दूत!
बहादुर की सारी करतूत।
सुना देना निर्भय सर्वत्र ५२

उदयसिंह का लेना तुम नाम,
और कहना वह है असहाय,
अगर जाओगे वहाँ न हाय!
मृत्यु दायक होगा परिणाम!! ५६

इस तरह रक्षा का ले वचन,
बाँधना यह रक्षा बन्धन,
'भगिनि प्रेषित यह प्यारा धन'
बाँधना इससे उनका मन ६०

इस तरह जाना तुम दरबार,
प्रेम-रक्षा का लो वरदान,
लौटना लेकर रक्षा-दान,
हर्ष-आँसू का ले दृग-भार ६४

शीघ्र जाओ, तुम दूत ! सवेग,
न लेना पथ में तनिक विराम,
शीघ्र कर अपना पूरा काम,
हृदय में भरा रहे आवेश ६८

मातृ भू की कर जय-गुहार,
जल्द जाओ तुम प्यारे वीर !
तुम्हारा रक्षित रहे शरीर—
करो 'हर' 'हर' का जय-जयकार !" ७२

दूत ने सादर किया प्रणाम,
झुकाया श्रीचरणों में माथ,
चला फिर वह गौरव के साथ,
हृदय में ले ईश्वर का नाम ७६

दशम सर्ग

मची थी अति अशान्ति सब ओर,
गूँजता था सब हिन्दुस्थान,
हुआ राज्यों का था अवसान,
हो रहा था भीषण रव घोर

कभी बलवाई करते राज्य,
शान्तिमय स्थान बने वीरान,
रानियों का होता अपमान,
नष्ट होता उनका साम्राज्य

कहीं शिशु का होता प्राणान्त,
कहीं होता था नारी हरण,
कहीं था राजाओं का मरण,
गूँज जाती विदिशायें शान्त

इस तरह जाना तुम दरबार,
प्रेम-रक्षा का लो वरदान,
लौटना लेकर रक्षा-दान,
हर्ष-आँसू का ले दृग-भार ६४

शीघ्र जाओ, तुम दूत ! सवेग,
न लेना पथ में तनिक विराम,
शीघ्र कर अपना पूरा काम,
हृदय में भरा रहे आवेश ६८

मातृ भू की कर जय-गुञ्जार,
जल्द जाओ तुम प्यारे वीर !
तुम्हारा रक्षित रहे शरीर—
करो 'हर' 'हर' का जय-जयकार !" ७२

दूत ने सादर किया प्रणाम,
झुकाया श्रीचरणों में माथ,
चला फिर वह गौरव के साथ,
हृदय में ले ईश्वर का नाम ७६

दशम सर्ग

मची थी अति अशान्ति सब ओर,
गूँजता था सब हिन्दुस्थान,
हुआ राज्यों का था अवसान,
हो रहा था भीषण रण घोर ४

कभी बलवाई करते राज्य,
शान्तिमय स्थान बने वीरान,
रानियों का होता अपमान,
नष्ट होता उनका साम्राज्य ८

कहीं शिशु का होता प्राणान्त,
कहीं होता था नारी-हरण,
कहीं था राजाओं का मरण,
गूँज जाती विदिशाएँ शान्त १२

बही था कहीं रक्त की धार,
मेदिनी धुलती बारम्बार,
दीन-दुखियों की करुण पुकार
गूँजती, करती वायु-विहार १६

उस समय शाह हुमायूँ मुगल
और दुर्धर्ष केसरीशाह,*
न कर कुछ राज्यों का परवाह,
लड़ रहे थे, जतला निज बल २०

रणस्थल था दल का बङ्गाल,
कभी—"बक्सर" में होता युद्ध,
हो रहे थे दोनों दल क्रुद्ध
रक्त से रञ्जित थी भू लाल २४

किन्तु थी शेरशाह में शक्ति,
हमेशा चलता था वह चाल,
न उसका होता बाँका बाल,
शौर्य में उसकी थी अनुरक्ति २८

---

*शेरशाह

छिड़ा था जब भारी संग्राम,
हुमायूँ था दुख से अभिभूत,
तभी चित्तौड़-प्रान्त का दूत,
वहाँ पहुँचा, कर नम्र प्रणाम ३२

हुमायूँ ने देखा वर-वेश,
अहा! यह राजपूत है वीर,
हो उठा तत्क्षण बहुत अधीर,
हो गए स्वेद-सिक्त सब केश! ३६

जहाँ है यवन-सैन्य का दल,
जहाँ हिन्दू न दीखता एक,
प्रेम से करने को अभिषेक
किस तरह आया आर्य प्रबल ४०

इस तरह यवन हुमायूँ शाह,
हो रहे थे उसको लख चकित
बन रहे थे वे चञ्चल चित
हुई मन में भाषण की चाह ४४

कह उठे, ऐ हिन्दु वरवीर
कहाँ से लाते हैं तशरीफ़;
आपकी कुछ सुन लूँ तारीफ,
पुरअसर थोड़ी सी तकरीर

कहाँ से लाए हैं फ़रमान
जल्द बतलावें अपना नाम
और मुझसे क्या है कुछ काम ?
आपके मन के क्या अरमान ?

देख कर यह प्यारी पोशाक
हो रहे जिन्दः-दिल मालूम,
करें मुझको न आप महरूम—
हाल से अपने, ऐ दिल-पाक !

हुमायूँ की यह सुन कर बात,
वीर हिन्दू ने किया सलाम,
और लेकर फिर अपना नाम,
लिया चित्तौड़ नाम विख्यात

"शहन्शाहे पे हिन्दुस्थान !
आपकी होती रहे विजय,
शत्रु से रहे न किञ्चित् भय
आपका वढता जावे मान ६४

आज मैं यहाँ आपके पास,
शीघ्र आया कुछ करने काम
महारानी करुणा का नाम—
सुना होगा चित्तोड-निवास ६८

उन्हीं का लाया हूँ सन्देश,
सुन उसको अब देकर ध्यान,
महारानी का कर सम्मान
बचावें उनका प्यारा देश ७२

हो रहे हैं अब उनको कष्ट,
उठ रही है उनके मन दाह,
हाय ! वह यवन बहादुरशाह
कर रहा राज्य पूर्णत नष्ट ७६

न है कोई भी अब रक्षक,
सैन्य है छोटी-सी परिमित,
शौर्य से यद्यपि हैं परिचित,
लड़ेंगे किन्तु वीर कब तक ? ८०

इसी से भेजा है यह पत्र
महारानी ने दुख के साथ,
हो रही हैं वे हाय ! अनाथ,
शोक ही है उनको सर्वत्र ८४

और यह भेजा है उपहार,
इसे कर लें सप्रेम स्वीकार,
पत्र पर सत्वर करें विचार,
और लें उनको शीघ्र उबार ८८

सुनाया करुण कथन स-विनीत,
पत्र दे शीघ्र झुकाया माथ,
बड़ी सम्मान-दृष्टि के साथ,
राज्य-वैभव से बना सभीत ९२

हुमायूँ ने ले पत्र स-चाह,
दे दिया निज मन्त्री के हाथ,
कहा—"तुम पढ़ो गौर के साथ,
मुझे हैरत होती है गाह ९६

ख़ुशी मैंने की है हासिल,
मिला मुझको रानी का ख़त,
मिली गोया है यह दौलत,
शान से उछल रहा है दिल, १००

अगर माँगी है मुझसे मदद,
अभी होता हूँ मैं तैयार,
करूँगा उस पर जान निसार,
शेर से जङ्ग करूँगा रद १०४

चाहता मैं सुनना तकरीर,
महारानी के ऐ दीवान!
दिखा दें हम भी हैं इन्सान,
खुल गई मेरी है तकदीर!" १०८

पढ़ा मन्त्री ने—"श्री श्रीमान,
आगरा दिल्ली के सुल्तान!
यवन वीरों के ऐ अभिमान,
न्याय के रक्षक कृपानिधान! ११२

आपसे करुणा की है विनय,
उसे सुनिए अब देकर ध्यान,
नष्ट होने वाला है मान,
पाप की होती है अब विजय ११६

पुण्य का होता है अवसान
पाप का बढ़ता प्रबल प्रताप,
यदि न रक्षा को आवें आप,
नष्ट हो जावेगा धन मान १२०

आज मैं रक्षा बन्धन भेज,
आपको बन्धु रही हूँ मान
हाथ लो खड्ग, फेंक कर म्यान
शत्रुओं को कर दें निस्तेज १२४

हिन्दुओं का है यह शुभ धर्म,
भेज भगिनी 'रक्षा-बन्धन'
बाँध लेती भाई का मन
'भगिनि-रक्षा' है उसका कर्म १२८

इसी रक्षा-बन्धन अनुसार,
आप मेरी रक्षा का भार,
शीघ्र लें लेकर कर तलवार,
यही विनती है बारम्बार १३२

हो रही हूँ मैं पूर्ण अनाथ,
नहीं हैं मेरे जीवन-धन,
बना सुख-उपवन भीषण वन !
खेलती हूँ मृग-जल के साथ !! १३६

छोड़ कर चले गए हृदयेश,
शोकमय यह नश्वर संसार !
और कर मेरा जीवन भार
हाय ! मेरे बिखरा कर केश १४०

समाई तारों में है कान्ति,
वही पर वे करते हैं वास,
स्वयं हँस, मुझको बना उदास,
भङ्ग करते हैं मेरी शान्ति १४४

कभी बन जाती हूँ पागल,
कभी उठता है विषम विषाद,
सदा रहती है उनकी याद,
अश्रु बहते रहते प्रतिपल १४८

पर न आए वे मेरे पास,
देख कर यह दुर्दशा अतीव,
झुकी रहती है मेरी ग्रीव
निरन्तर उठता है उच्छ्वास। १५२

कभी उठती आशा की कोर,
मातृ-भू-रज जब लेती चूम,
शत्रु जब जीतेंगे यह भूमि,
रजज हो आवेंगे इस ओर। १५६

बनी हूँ मैं सब भाँति विकल,
काँप उठता तन बारम्बार,
किस तरह देखूँगी इस बार,
भूमि पर रिपु का छल या बल ?

सम्हालो तुम आकर इस बार,
डूबती मेरी नौका हाय !
करो रक्षा का कुछ सदुपाय,
बुलाती भगिनी बारम्बार !

तुम्हारा भगिनी सुत है बाल,
उसे कैसे हो रण का ज्ञान ?
अभी तो है वह शिशु अनजान,
युद्ध का क्या जाने वह हाल ?

शीघ्र रक्षा का करो विचार,
घिर रहा है अब राज्य-निकेत,
अभी आओ निज सैन्य समेत,
अन्यथा होगी मेरी हार

एक दुखिनी का कर दुख दूर,
उसे दो सुख की अब सम्पत्ति,
दूर कर उसकी सब आपत्ति,
अभय उसको कर दो भरपूर

यही है मेरा आशिर्वाद,
करो रिपु-सेना का तुम नाश,
गुँजा जय-ध्वनि से सब आकाश,
हटा दो रिपु का रण-उन्माद

जीत कर जब आओगे भवन,
तुम्हारी बहिन सजा कर थाल,
भ्रातृ-उर देगी माला डाल,
बहिन-भाई का होगा मिलन

विजय हूँ मना रही निशि दिन,
तुम्हारा यश हो भू में व्याप्त,
कर रही हूँ अब पत्र समाप्त
तुम्हारी प्यारी—करुणा बहिन !”

हुमायूँ ने (सुन कर यह पत्र,)
खींच कर गौरव से निश्वास,
बुलाई बहुत शीघ्र ही पास,
सैन्य जो फैली थी सर्वत्र १९२

खींच भृकुटी, ऊँचा कर हाथ,
शीघ्र विस्फारित कर लोचन,
'इलाही' कह कर मन ही मन,
कहा फिर बड़े जोश के साथ १९६

"अरे मेरे सिपाहियो! आज,
फतहयाबी करना हासिल
न होना मौके पर बुजदिल
यही तो लेना है अन्दाज २००

अगर हुब्बे-वतनी रजपूत,
चाहते आज हमारी मदद,
मदद देने की कर दो हद
दिलेरी का दो खूब सुबूत २०४

दिलों में रक्खो इतमीनान,
तवारीखों में होगा नाम,
न वन सकने हो कभी गलाम
रहेगा वाकी नाम-निशान २०८

दिखा सच्ची वहादुरी आज,
उदू को कर दो विलकुल पस्त
करोगे हासिल तुम्हीं विहिश्त,
और दुनिया में पाओ राज ! २१२

न समझो अपनी जान अजीज
वढ़ो खुश हो मैदाने-जङ्ग
देख कर सव हो जावें दङ्ग,
समझना तुम सवको नाचीज़ २१६

अदा करना है अपना हक
फौज यह हो तमाम मुस्तैद,
न होवे किसी वात की कैद,
जङ्ग को वख्शो अब रौनक २२०

तवक्कुफ़ करना जहज. एक,
मुनासिब है न हमें इस वक्त,
न हो कोई भी दिले-शिकस्त,
दिलेरी में दिलेर हों नेक २२४

ॐ

हटा कर शेरशाह से जङ्ग,
मुख़ातिब हो चित्तोड़ तरफ़
सुलह के लिख दो उसको हरूफ
यही होने दो अपना ढङ्ग २२८

ॐ

यही है आजमाइश का काम,
अदा कर देना अपना नमक,
नहीं है अपना आज तलक,
बुज़दिले फ़िहरिस्तों में नाम २३२

ॐ

न समझो तुम अपना आराम,
दिलेरो! अब बमुक़ाबिल जङ्ग,
रहे सख़र पर ख़ूँ का रङ्ग
यही तो मेरा है अञ्जाम २३६

ॐ

दिलों में रक्खो इतमीनान,
तवारीखों में होगा नाम,
न बन सकते हो कभी गुलाम
रहेगा बाकी नाम-निशान २०८

दिखा सच्ची बहादुरी आज,
उदू को कर दो बिलकुल पस्त
करोगे हासिल तुम्हीं बिहिश्त,
और दुनिया में पाओ राज ! २१२

न समझो अपनी जान अज़ीज
बढ़ो खुश हो मैदाने-जङ्ग
देख कर सब हो जावें दङ्ग,
समझना तुम सबको नाचीज २१६

अदा करना है अपना हक
फ़ौज यह हो तमाम मुस्तैद,
न होवे किसी बात की कैद,
जङ्ग को बख़्शो अब रौनक २२०

तवक्कफ करना लहज़ः एक,
मुनासिब है न हमें इस वक्त,
न हो कोई भी दिले-शिकस्त,
दिलेरी में दिलेर हों नेक २२४

हटा कर शेरशाह से जङ्ग,
मुखातिब हो चित्तौड तरफ
सुलह के लिए दो उसको हरुफ
यही होने दो अपना ढङ्ग २२८

यही है अजमाइश का काम,
अदा कर देना अपना नमक,
नहीं है अपना आज तलक,
बुजदिले फिहरिस्तों में नाम २३२

न समझो तुम अपना आराम,
दिलेरो ! अब बमुकाबिल जङ्ग,
रहे खञ्जर पर खूँ का रङ्ग
यही तो मेरा है अञाम २३६

दिलों में रक्खो इतमीनान,
तवारीखों में होगा नाम,
न बन सकने हो कभी गलाम
रहेगा बाकी नाम-निशान २०८

✿

दिखा सच्ची बहादुरी आज,
उदू को कर दो बिलकुल पस्त
करोगे हासिल तुम्हीं बिहिश्त,
और दुनिया में पाओ राज। २१२

✿

न समझो अपनी जान अज़ीज
बढ़ो खुश हो मैदाने-जङ्ग
देख कर सब हो जावें दङ्ग,
समझना तुम सबको नाचीज २१६

✿

अदा करना है अपना हक
फौज यह हो तमाम मुस्तैद,
न होवे किसी बात की कैद,
जङ्ग को बख्शो अब रौनक २२०

✿

खुशनुमा मुल्क बना जङ्गल,
लड़ेगा अगर बहादुरशाह,
न कर इसकी कुछ भी परवाह,
नेकनामी करना हासिल ! २५६

नहीं सह सकते हैं हम आह !
बने बुजदिल इतनी जुरअत,
करो हासिल लड़ कर राहत,
यही कहता है शाहन्शाह !" २६०

निहायत दिली खुशी की खबर,
आज सुनता हूँ अपने कान,
न ऐशो-इशरत के सामान,
रहें अब अपने बिस्तर पर २४०

कुव्वते-बाजू से चोकन,
उदू को कर देंगे पामाल,
सलतनत पर आए न जवाल,
लहू से रँग लेंगे दामन २४४

नहीं हैं हम आराम तलब,
लड़ेंगे हम बजोर शमशीर,
सुन चुके बहुत-बहुत तकरीर,
जङ्ग से होगी राहत अब ! २४८

गुलबदन की ख्वाहिश को छोड़,
करो अब खौफनाक तुम जङ्ग,
बहादुर भी हो तुमसे तङ्ग,
जङ्ग से ले अपना मुँह मोड़ ! २५२

किरण माला का गुम्फित जाल,
अरुण मुख रवि ने खींचा मुदित
उसी क्षण फँस कर उसमें त्वरित
निकल आया ऊपर शशि बाल

क्योंकि थी शशि की पैनी धार,
कट गया रवि का सारा जाल,
दिया पश्चिम कोने में डाल,
तारिकाओं ने कर अभिसार

खेलता पहुँचा वह सविनोद,
बढ़ा कर अपने कर अस्पष्ट
रजनि तम-वैभव को कर नष्ट
समुद बैठा वह नभ की गोद

उसी क्षण राज महल में उदित,
दूसरा था मयङ्क-मुख विमल
किन्तु था वह दुख से अति विकल
और नभ-शशि था मन में मुदित

एकादश सर्ग

हो गया था सन्ध्या का काल
सूर्य ने पश्चिम किया प्रयाण
दिशा-देवी ने कर निर्माण—
लाल रँग, फेंकी अरुण गुलाल

हो गया रञ्जित रँग से गगन,
फूल फूले थे मानो लाल
तोड़ने आई रजनी-बाल
साथ ले ताराओं के गण।

दिशा पश्चिम में नभ सर्वत्र
विविध रङ्गों से था रञ्जित
मातु ने होकर मानो मुदित
बाल को पहिनाए थे वस्त्र

किरण माला का गुम्फित जाल,
अरुण मुख रवि ने खींचा मुदित
उसी क्षण फँस कर उसमें त्वरित
निकल आया ऊपर शशि-बाल १६

क्योंकि थी शशि की पैनी धार,
कट गया रवि का सारा जाल,
दिया पश्चिम कोने में डाल,
तारिकाओं ने कर अभिसार २०

खेलता पहुँचा वह सविनोद,
बढ़ा कर अपने कर अस्पष्ट
रजनि-तम-वैभव को कर नष्ट
समुद बैठा वह नभ की गोद २४

उसी क्षण राज महल में उदित,
दूसरा था मयङ्क-मुख विमल
किन्तु था वह दुख से अति विकल
और नभ शशि था मन में मुदित २८

बढ़े जलधर दोनों की ओर,
एक ने जलद किया उज्ज्वल,
अन्य को घन ने कर धूमिल !
मलिन कर दी उसकी नव-कोर,

देवि करुणा कर दृग अनिमेष,
देखती थी वन-पथ की ओर,
नेत्र को देती थी झकझोर,
उष्ण निश्वास प्रभञ्जन-वेष

निकल जाते मुख से अस्पष्ट,
शब्द कुछ ओष्ठ द्वार को खोल,
निकटवर्ती समीर में डोल,
गूँज कर हो जाते थे नष्ट।

भाव-लहरी का आन्दोलन,
हो रहा था मुख पर अविराम,
कभी ले शाह हुमायूँ नाम,
देखती पथ को उत्सुक बन

निराशा-आशा का यह रण,
हर्ष चिन्ता का था मिश्रण,
उमॅगता-द्रवता मन प्रतिक्षण,
खेलता दृग में आँसू-कण।

सोचती थी वह वन स-विषाद,
हुमायूँ आते हों इस काल,
सँदेशा पाते ही तत्काल,
उठे होंगे कर मेरी याद

एक हीनावस्था में पतित,
नारि को करने को रक्षण,
बन्द कर शेरशाह से रण
छोड़ कर उसको अब तक अजित

सैन्य के सहित यहाँ प्रस्थान,
शीघ्र ही करते हों इस काल,
जान कर मेरा दुखमय हाल
चले होंगे स-सैन्य सुख-मान

बढ़े जलधर दोनों की ओर,
एक ने जलद किया उज्ज्वल,
अन्य को घन ने कर धूमिल !
मलिन कर दी उसकी नव-कोर, ३२

देवि करुणा कर दृग अनिमेष,
देखती थी वन-पथ की ओर,
नेत्र को देती थी झकझोर,
उष्ण निश्वास प्रभञ्जन-वेग ३६

निकल जाते मुख से अस्पष्ट,
शब्द कुछ ओष्ठ द्वार को खोल,
निकटवर्ती समीर में डोल,
गूँज कर हो जाते थे नष्ट। ४०

भाव-लहरी का आन्दोलन,
हो रहा था मुख पर अविराम,
कभी ले शाह हुमायूँ नाम,
देखती पथ को उत्सुक बन ४४

भाग्य हो दीख रहा प्रतिकूल,
सहायक नृप है अनुपस्थित,
हो रहा हृदय दुराशा-सहित,
उड़ेगी क्या स्वधर्म की धूल ?

❦

सुन रही समाचार यह आज,
आ रहा चढ़ा बहादुरशाह,
छीन लेगा वह हमसे आह !
हमारा सुन्दर नारि-समाज !

❦

हमारी ललित लजीली सरल,
नारियों का जब होगा हरण !
भला, किसकी लेंगी हम शरण ?
यवन का बहु-सख्यक है दल !

❦

परम सुन्दर छविमय सुकुमार,
रूप का ही है जिन पर भार,
देख कर उन पर अत्याचार,
क्यों न ये दृग फूटें सौ बार ?

❦

किन्तु वे अब तक आए हैं न,
सदा वे रहते हैं स्वच्छन्द,
कहीं शोकाश्रु-बिन्दु से मन्द,
देखते हों न स्पष्ट ये नैन! ६४

विश्वजननी! करती हूँ विनय,
मार्ग में उन्हें विघ्न अब हों न,
अन्यथा रक्षक होगा कौन?
जब कि रिपुओं का है यह भय! ६८

मार्ग में जितने होंवे शूल,
उन्हें हो जावें कोमल फूल,
मृत्तिका हो सुरसरि की धूल,
पुण्यदायक बन जावे भूल ७२

अगर मैं आज हुई असहाय,
क्या न रक्षक हैं प्रभु के हाथ?
देख कर मुझे मलीन अनाथ!
करेंगे मङ्गलमय सदुपाय ७६

छीन कर मुझसे सब चित्तौर,
करे वह शीघ्र हजारों यत्न,
किन्तु उड जावेगा पिश-रत्न,
भले हो ले वह सारा चौर ११२

रहेगा रत्न-सतीत्व अम्लान,
रत्न ढेरों का कर ले चयन,
घुसेगा जब वह भीतर भवन,
देख लेगा ललना-बलिदान ! ११६

लखेगा स्वाभिमान का मान,
उच्च पातिव्रत का उत्कर्ष,
मान पर मरने का आदर्श,
हमारे कर्तव्यों का ज्ञान ! १२०

नारियों का हठ-अभ्युत्थान,
धर्म-प्रियता का व्रत प्रोज्ज्वल,
क्षीण-कटि का यह अनुपम बल,
मृत्यु का सादर प्रेमाह्वान १२४

कहाँ ललना का गोरा गात,
और उसका विकसित मृदु वदन,
कहाँ काला वह निष्ठुर यवन,
कहाँ तम और कहाँ प्रिय प्रात?

कहाँ नवनीत-समान शरीर,
कहाँ कालिख-सा काला रङ्ग?
कहाँ तुर्की-टोपी का ढङ्ग!
और है कहाँ मनोहर चीर?

न होने दूँगी यह मिथ्यण,
न छू पावे ललना को यवन,
लूट ले जावे सारा भवन,
पर न टूटेगा मेरा प्रण

महल को कर दे खण्डहर आज,
धेनु, गज, घोड़े ले वह लूट,
कोष भी मुझसे जावे छूट,
किन्तु रक्षित हो नारि-समाज

छीन कर मुझसे सब चित्तौर,
करे वह शीघ्र हजारों यत्न,
किन्तु उड़ जावेगा पिश-रत्न,
भले हो ले वह सारा चौर

❦

रहेगा रत्न-सतीत्व अम्लान,
रत्न ढेरों का कर ले चयन,
घुसेगा जब वह भीतर भवन,
देख लेगा ललना-बलिदान !

❦

रखेगा स्वाभिमान का मान,
उच्च पातिव्रत का उत्कर्ष,
मान पर मरने का आदर्श,
हमारे कर्तव्यों का ध्यान !

❦

नारियों का दृढ़-अभ्युत्थान,
धर्म-प्रियता का मत प्रोज्ज्वल,
क्षीण-कटि का यह अनुपम बल,
मृत्यु का सादर प्रेमाह्वान

❦

यवन-वैभव का अति अपमान,
आर्य-दृढ़ता का पूर्ण प्रमाण,
स्वय अपनी लज्जा का त्राण,
और स्वच्छन्द-भाव का गान । १२८-

आर्य-गौरव का गुणमय ग्रथन,
रिपु-विगर्हण का कुत्सित भाव,
और आर्यों का अमित प्रभाव,
देख लेगा वह विजित यवन । १३२

सदा गूँजेगा मेरा शाप,
इन्हीं नीरव-भवनों में घूम,
अग्नि-लपटों से उठता धूम,
रुलाएगा रिपु को चुपचाप १३६

अरे, देखो ! उत्तर की ओर,
उठ रहा किस सेना का घोष,
हुमायूँ सेना-सहित, सरोष,
आ रहा रण करने क्या घोर ? १४०-

धन्य है ईश्वर की शुभ दृष्टि,
हुई है रक्षित मेरी लाज !
सजाऊँगी मङ्गल का साज !
करूँगी शुभ कार्यों की सृष्टि ! १४४

गई हूँ मैं अब सब दुख भूल
हुमायूँ की सहायता-प्राप्त,
शीघ्र आ पहुँची है पर्याप्त,
भाग्य है अब मेरे अनुकूल ! १४८

हो रहा वाद्यों का है नाद,
और छाया है भीषण रव,
धूल से छाया है नभ सब,
सैन्य के चलने ही के बाद ! १५२

चमक जाते हैं नभ में प्रास,
शीघ्र सुन पड़ती है हुङ्कार,
स्पष्ट सुन पड़ती है ललकार,
सैन्य जब आती है कुछ पास १५६

यवन-वैभव का अति अपमान,
आर्य-दृढ़ता का पूर्ण प्रमाण,
स्वयं अपनी लज्जा का त्राण,
और स्वच्छन्द-भाव का गान ! १२८

आर्य-गौरव का गुणमय ग्रथन,
रिपु-विगर्हण का कुत्सित भाव,
और आर्यों का अमित प्रभाव,
देख लेगा वह विजित यवन ! १३२

सदा गूँजेगा मेरा शाप,
इन्हीं नीरव-भवनों में घूम,
अग्नि-लपटों से उठता धूम,
रुलाएगा रिपु को चुपचाप १३६

अरे, देखो ! उत्तर की ओर,
उठ रहा किस सेना का घोष,
हुमायूँ सेना-सहित, सरोष,
आ रहा रण करने क्या घोर ? १४०

द्वादश सर्ग

अरुण किरणों का नव रँग डाल,
राजपूतों के मस्तक पर,
लाल-चन्दन से रञ्जित कर,
रण-विदा देता था रवि-बाल

खड़े थे राजपूत सज्जित,
रहा था कर में चमक कृपाण,
मातृ-भू का करना है त्राण,
इन्हीं भावों में थे मज्जित

शुद्ध केसरिया थे सब वस्त्र,
केश में गुथे हुए थे फूल,
हाथ में थे शर-धनु औ' शूल
और थे भाँति भाँति के शस्त्र

अगर ईश्वर ही है सन्नद्ध,
हमारा करने को अब नाश,
बने हैं हम भी समुद, सहास,
और मरने को हैं कटिबद्ध ! १९८

शीघ्र सजने का अब आदेश,
अभी सेना को देती अभय,
स्वर्ग जाने का मङ्गलमय—
नारियों को देती उपदेश ! १९९

अगर होना है आज अनिष्ट,
न मुझको डर है अब लवलेश,
वीर क्षत्राणी का रख वेश,
हमें मरना ही है अब इष्ट ! २००

गूँजते थे समीर में गान,
भवन से प्रतिध्वनि बारम्बार—
हो रही थी मानों हर बार
यही गायन गाते सब स्थान ६४

उछाले जाते नभ सित फूल,
मनोरम शोभा थी उस काल,
प्रात में मानों तारे बाल,
आ गए थे नभ में पथ भूल ६८

जा रहीं ललनाएँ सानन्द,
वन्दना करने देव-निकेत,
ज्ञात होता था, शान्ति समेत,
जा रहीं सुर-बालाएँ मन्द ७२

वदन थे वन्दनीय अनुपम,
अहा! उनकी छवि थी अभिराम,
उन्हें यदि सादर करें प्रणाम,
विश्व में भाग्यवान हैं हम ७६

चिता ही के सब ओर समीप,
फूल-रेखाएँ थीं सज्जित,
भूमि थी चन्दन से चर्चित,
जल रहे थे छोटे-से दीप ४८

महल से सजो चिता के पास,
लगे थे सुन्दर बन्दनवार,
बने थे नव फूलों के द्वार,
और उनमें था दीप-प्रकाश ५२

एक क्षण में सब नारि-समाज,
पुष्प-द्वारों में हो समवेत,
चल पड़ा दालि-समूह समेत—
मंदिरों को, ले मङ्गल साज ५६

मनोहर मन्द-मन्द थी चाल,
हो रही थी नूपुर-झङ्कार,
कर रहे थे क्या सुर जयकार,
आर्य-ललनाओं का उस काल! ६०

धर्म-हित होता सबका मरण,
सभी "जौहर" को हैं तैयार,
हृदय में कुत्सित हैं न विचार,
तुम्हारे ही, मन में हैं चरण ९६

नहीं है भाव हृदय में और,
रही केवल इतनी ही चाह,
अन्त में हम सब मिल कर आह !
सुरक्षित कर न सकीं चित्तौर ॥ १००

मानती हैं पातिव्रत-धर्म,
इसी से है न मृत्यु का भय,
अगर यवनों की रही विजय,
न कर पावेगा वह दुष्कर्म १०८

देवि ! अब तक होकर अनुकूल,
कृपा की है जो तुमने सदय,
उसी से हुआ हमारा उदय,
फूल थे जो दिखते थे शूल १०८

मन्द गति से इस भाँति समोद,
शीघ्र मन्दिर पहुँचा रनिवास,
गूँजा जय-ध्वनि, से सब आकाश,
हुआ एकत्रित वह सविनोद ८०

महा श्रीदुर्गा देवि समीप,
महारानी करुणा ने हाथ
जोड कर बडे प्रेम के साथ,
जलाया कर्पूरों का दीप ८४

किया फिर आदर से पूजन
आरती की श्रद्धा के साथ,
झुकाया बडे प्रेम से माथ,
कहा फिर होकर प्रमुदित मन ८८

"देवि ! यह है अन्तिम पूजन,
क्षमा करना सबकी सब भूल,
रहें सब पर सदैव अनुकूल,
न करना हमसे निष्ठुरपन ९२

तुम्हारे क्रोधानल में लीन,
न होने पावे वह वरवीर,
हाथ में ले असि, हो रणधीर,
मातृ-भू सिंहासन-आसीन

ॐ

हमारी बलि का वह परिशोध
यवन से ले-लेकर संग्राम,
हाय ! पति का वह रख ले नाम,
उसे हो अपने ऋण का बोध !

ॐ

तुम्हारी कृपा-कोर अनुकूल,
करे उसकी विघ्नों से आड़,
शीघ्र कर दे स्वतन्त्र मेवाड़
हाथ में लेकर वह शर-शूल !

ॐ

शत्रु अब आया बहुत समीप,
हमारे वीर गए मैदान,
उदयसिंह को देना वरदान,
रहे रक्षित वह वंश-प्रदीप

ॐ

आज हम करतीं स्वर्ग-प्रयाण,
चिता-ज्वाला पर चढ़ सविनोद,
मातृ-भू की रक्षित हो गोद,
उसी का हो सदैव कल्याण

शत्रु से बचने के हित सजनि !
ज्वाल की माल करें धारण,
मूल तो हम ही हैं कारण,
शत्रु के धावे का हे जननि !

इसी से यदि सबका प्राणान्त,
शीघ्र ही हो जावे इस काल,
न डस पावेगा वह रिपु-व्याल
शीघ्र हो जावेगा वह शान्त

इसी से हे जननी ! यह विनय,
जनाती हैं सब जोड़े हाथ
न करना यह चित्तौड़ अनाथ,
उदित ही रहे हमारा 'उदय'

मातृ-भू का कर मन में ध्यान,
हृदय में कर भावों की सृष्टि,
चिता की ओर उठा कर दृष्टि,
किया फिर धीरे से प्रस्थान १६०

कुछ समय ही में वे सोल्लास,
मधुर वाणी से गाकर गान,
हृदय में पतियों का कर ध्यान,
आ गईं सभी चिता के पास १६४

चिता का रौद्र वेष भीषण !
नारि-अङ्गों का कर उपहास,
कर रहा मानों अट्टाहास,
भभक उठता था वह प्रतिक्षण ! १६८

यहाँ से वहाँ पलट कर लपट,
छोड़ती थी काला-सा धूम
मलय-काष्ठों के बीचों घूम
शीघ्र हो जाती छिप कर प्रकट १७२

चाहतीं हम आज्ञा इस काल,
आपके चरणों की ले धूल,
न छूने पावें यवन दुकूल,
और छू लें हम ज्वालामाल   १४४

चाहती हैं न जननि ! हम और,
आपके श्रीचरणों को चूम
पुन॰ मर कर आवें इस भूमि
और फिर से पावें चित्तौर   १४८

तुम्हारी जय का हो गुञ्जार,
और हो 'हर' 'हर' 'हर' का नाद,
हृदय में भरा रहे आह्लाद
मातृ-भू का हो जय-जयकार!"   १५२

पुष्प-वर्षा हो गई स-चैन,
रानियों ने गा मङ्गल-गान,
चिता की ओर किया प्रस्थान,
मन्द गति से नीचे कर नैन   १५६

चिता में पड़ा रश्मि का दल,
मौन कहता था वह मन्भ्रम,
तुम्हारे बदले गिर कर हम,
चिता ही में जावेंगे जल। १९२

卐

चिता का अविदित अविरत गान,
गुँजाता था सब राज्य-निकेत,
चिता भी मानों प्रेम समेत,
लपट कर से करती आह्वान! १९६

卐

देवि करुणा ने दे आदेश,
बुलाया ललनाओं का दल,
कहा सबसे होकर अविचल,
दिया कर्तव्यों का उपदेश! २००

卐

"सजनि! अब आया है वह समय,
जब कि हम दें अपना परिचय,
वीर क्षत्राणी बन निर्भय,
[illegible] में निज धर्मोदय! २०४

卐

काल की जीभों के सम लपक,
लपट उठती थी चारों ओर,
वायु जब देता था झकझोर,
शब्द 'धू'-'धू' कर जाती धधक १७६

अग्नि का यही भयानक वेश,
धूम-युत था करुणा-उपमान,
क्योंकि वे धार अरुण परिधान,
खोलती थीं हाथों से केश १८०

पहिन करुणा ने अरुण दुकूल,
चिता में फेंके सुन्दर सुमन,
दिवाकर भी ऊँचे उठ गगन
फेंकते अरुण-करों के फूल १८४

रश्मियों से मिश्रित था धूम,
मनोहर शोभा थी सुखमय,
अग्नि-स्वाहा के कच समुदय,
रहे हैं कुवलय मानों चूम १८८

चिता में पड़ा रश्मि का दल,
मौन कहता था वह ससम्भ्रम,
तुम्हारे बदले गिर कर हम,
चिता ही में जावेंगे जल ! १९२

चिता का अविदित अविरत गान,
गुँजाता था सब राज्य निकेत,
चिता भी मानों प्रेम समेत,
लपट कर से करती आह्वान ! १९६

देवि करुणा ने दे आदेश,
बुलाया ललनाओं का दल,
कहा सबसे होकर अविचल,
दिया कर्तव्यों का उपदेश ! २००

"सजनि ! अब आया है वह समय,
जब कि हम दें अपना परिचय,
वीर क्षत्राणी बन निर्भर,
करें जग में निज धर्मोदय ! २०४

यवन कर यदि बल का अभिमान,
हो रहे हैं रण को तत्पर
किन्तु हम भी तो हिल मिल कर,
जानतीं करना निज बलिदान ! २०८

हमें भी बल का है अभिमान,
किन्तु वह पूर्ण अहिंसा-रूप,
नारियों का यह शस्त्र अनूप,
करेगा धर्म-कर्म का त्राण ! २१२

हमारे वीर सहित अनुराग,
जलावें रण में क्रोधानल,
किन्तु हम भी उसके प्रतिफल,
जलावेंगी महलों में आग २१६

यवन यदि करे करोड़ों यत्न,
हमें छूने का निष्ठुर बन,
किन्तु कर हम निज व्रत पालन
करें रक्षित सतीत्व का रत्न ! २२०

उसी की रक्षा के हित आज,
यहाँ पर समुपस्थित हम सब,
मनाओ सब मिल कर उत्सव,
सुखी हो प्यारा नारि-समाज। २२४

न चिन्ता की है कोइ बात,
हृदय में आता है नव हर्ष,
यही है पातिव्रत-उत्कर्ष,
जलाया जा सकता है गात। २२८

हमारे वीर गहे तलवार,
गए हैं आत्म-समर्पण हेतु,
चिता है लाल रङ्ग का सेतु,
धर्म-सागर करने को पार। २३२

न मन में हो किञ्चित् भी भय,
धर्म पर हो नूतन बलिदान,
उच्च पातिव्रत पर हो ध्यान,
आज "जौहर" का ही अभिनय २३६

अग्नि की लपटों ही के साथ,
बैठ कर चारु चिता की गोद,
पहुँच जावें हम सजनि ! समोद,
जहाँ होंगे निज प्यारे नाथ !" २४०

बुलाया शीघ्र उदयसिंह पास,
और उसको देकर अशीष,
सूँघ कर उसका सुन्दर शीश,
लिया चुम्बन सविनोद सहास २४४

अलक कर से सँवारते समुद,
प्रेम से बोली "प्यारे उदय !
समय पर तेरा हो शुभ उदय,
बने कमनीय इन्दु-कुल-कुमुद ! २४८

जानता तू है अपना कर्म,
इस समय क्या करना है योग्य,
भाग्य में जो होता है भोग्य,
भोगना उसको ही है धर्म २५२

यवन ने छेड़ा है जो रण,
उसी का करने को प्रतिकार
गए हैं राजपूत-सरदार,
हमारी रक्षा के कारण २५६

जानता है तू, अपनी जीत—
आज होने में है सन्देह,
धर्म से हम सबका है स्नेह,
उसी के गाती हैं हम गीत २६०

इसी हित चिता हुई तैयार,
उसी में हम सब हों बलिदान,
न यवनों से हो कुछ अपमान,
इसी से मरने से है प्यार २६४

किन्तु तुम जाओ बूँदी आज,
वहाँ अपने मामा के पास,
बड़े होने तक करना वास,
अन्त में रखना मेरी लाज २६८

यवन से बदला लेना लाल !
इसी बलिदान चिता का वीर,
आज जो जलता है यह चीर,
जलाना रिपु की टोपी लाल २७२

शान्ति से सदा बिताना काल,
कभी कर हम सब की तुम याद
स्मरण कर मेरा आशिर्वाद,
बुलाना शीघ्र यवन का काल २७६

देर अब होती है प्रिय बाल !
मुझे चुम्बन दो फिर एक और,
बचाना पुत्र ! पुनः चित्तौर
यही मेरी आज्ञा इस काल !! २८०

हृदय से लग जाओ फिर लाल !
प्रेम से लो यह आशिर्वाद,
कभी कर अपनी माँ की याद,
प्रेम के आँसू देना डाल" २८४

हुआ कर्तव्य प्रेम का द्वन्द,
पक लेकर सुत का चुम्बन,
और अन्तिम कर आलिङ्गन,
कर लिए करुणा ने दृग बन्द, २८८

उदयसिंह ने गह कर अञ्चल,
कहा, "मुजको वी दो तलवाल,
अवी ललता ऊँ दे ललकाल,
आल्य का मुज में वी प बल २९२

अगल मुजको छोता-छा जान,
न कलने दोगी लन का काज,
जला दो मुजे चिता में आज,
कवी जाऊँगा वूँदी मा ! न २९६

सुवी जब ले 'हल' 'हल' का नाम,
कल लप अपना जाम छनाथ
क्यों न मैं वी अव सुख के छाथ,
आ छकूँ मातृ-वूमि के काम ? ३००

आगई सभी चिता के पास,
उछाले गए सुगन्धित सुमन
प्रेम से किया देवि को नमन
आरती की सबने सविलास ३३६

खोल कर अपने कुञ्चित केश,
चिता में मालाएँ दी डाल,
किया फिर केसर-सज्जित भाल,
बनाया मङ्गलमय सब वेश ३४०

प्रेम से की प्रदक्षिणा और,
चिता-पूजन करके सविधान,
किया कल-कण्ठों से जयगान,
और पूजा प्यारा चित्तौर ! ३४४

उठी करुणा की एक हिलोर,
किया दुर्गा को पुनः प्रणाम
प्राणपति का ले मन में नाम
देख कर पुण्य-भूमि की ओर ! ३४८

मिलाया लपट करों से हाथ,
चिता के अङ्क हुई आसीन,
पहिन लपटों का वस्त्र नवीन,
हुई सज्जित स्वाहा के साथ ३५२

पूर्व में उठी उषा की ज्वाल,
छोड कर नव समीर-निश्वास
कलरवों मिस गा गान सहास
जल गई नभ में तारक माल ३५६

लपट ने कर स्वागत सत्कार,
समर्पित किया उन्हें निज अङ्क
देव-वनिताएँ बनीं निशङ्क
कर रहीं अरुणोपवन-विहार ३६०

छा गई चारों ओर प्रशान्ति,
न सुन पडते थे कोई वचन
मौन थे नव अनलारुण वदन
मची थी लपटों ही में क्रान्ति ३६४

लपट का अति भीषण नर्तन,
हो रहा था सुन्दरियों साथ,
झुका कर लपटें चञ्चल माथ,
दिखाती थीं अनन्त यौवन ! ३६८

सूर्य ने पहिनाई कर-माल,
सुमन की दीं मालिनि ने डाल
चिता ने करुणा-उर में लाल—
ज्वाल-मालाएँ भी दीं डाल ३७२

इस तरह समुद नाम ले 'नाथ'
धर्म की लज्जा रक्षण-हेतु,
करों में रख ज्वाला का केतु
नारियाँ गईं धूम के साथ ३७६

शोक से पूर्णरूप अभिभूत,
आज रह गई कहानी शेष,
भरे वह हृदयों में आवेश,
हृदय को करे पवित्रीभूत ! ३८०

चिता का जला हुआ कण शेष,
कहेगा मौन-भाव के साथ,
आर्य-ललनाओं की शुभ गाथ,
करेगा गौरव-गर्वित देश ३८४

लपट का अति भीषण नर्तन,
हो रहा था सुन्दरियों साथ,
झुका कर लपटें चञ्चल माथ,
दिखाती थीं अनन्त यौवन।

सूर्य ने पहिनाईं कर-माल,
सुमन की दीं मालिनि ने डाल
चिता ने करुणा-उर में लाल—
ज्वाल-मालाएँ भी दीं डाल

इस तरह समुद नाम ले 'नाथ'
धर्म की लज्जा रक्षण-हेतु,
करों में रख ज्वाला का केतु
नारियाँ गईं धूम के साथ

शोक से पूर्णरूप अभिभूत,
आज रह गई कहानी शेष,
भरे वह हृदयों में आवेश,
हृदय को करे पवित्रीभूत।

होगई जब यवनों की जीत,
ध्वस हो चुका सभी रनिवास
हुमायूँ का दल आया पास,
जोश के गाता ऊँचे गीत १६

छिड़ गया फिर से भीषण रण
इधर बाबर-सुत आलीजाह,
उधर था यवन बहादुरशाह
लगे गिरने शोणित के कण २०

अन्त में हुई हुमायूँ-विजय,
बहादुरशाह गया था हार,
हार ही था उसका उपहार,
शीघ्र भागा गुजरात सभय २४

किन्तु क्या हुआ जीत का फल ?
हुमायूँ ने सुन जौहर गाथ
झुकाया बड़े शोक से माथ
हुई है विजय पूर्ण निष्फल ! २८

उपसंहार

आ गया यवन बहादुरशाह,
राजपूतों ने होकर क्रुद्ध,
लोमहर्षण कर डाला युद्ध
अन्त तक ली न एक भी आह। ४

बहादुर की थी सैन्य अपार
बढ़ा था उसको रण-उन्माद,
आगई करती 'अकबर' नाद,
आर्य-दल गया शीघ्र ही हार ८

काम आया रण में प्रत्येक,
देश-गौरव का गर्वित आर्य,
हुई चित्तौर-भूमि कृत-कार्य,
हुआ भू का शोणित-अभिषेक १२

होगई जब यवनों की जीत,
ध्वस्त हो चुका सभी रनिवास
हुमायूँ का दल आया पास,
जोश के गाता ऊँचे गीत १६

छिड़ गया फिर से भीषण रण
इधर बाबर-सुत आलीजाह,
उधर था यवन बहादुरशाह
लगे गिरने शोणित के कण २०

अन्त में हुई हुमायूँ-विजय,
बहादुरशाह गया था हार,
हार ही था उसका उपहार,
शीघ्र भागा गुजरात सभय २४

किन्तु क्या हुआ जीत का फल ?
हुमायूँ ने सुन जौहर गाथ
झुकाया बड़े शोक से माथ
हुई है विजय पूर्ण निष्फल ! २८

कहा उसने होकर निरुपाय,
"इलाही! फतह न की हासिल
कौन है ऐसा जिन्दा-दिल
कह न उट्ठेगा जो अब हाय! ३२

हाय! गुलबदनों का कुर्बान,
कर रहा मेरे दिल को खाक,
अरे, मैं कैसा हूँ नापाक,
क्यों न जाती है मेरी जान ३६

मिले मिट्टी में उम्र दराज,
लग गई आने में क्यों देर,
कर दिया अगर उदू को ज़ेर,
किया हासिल क्या मैंने आज ?" ४०

वाम विधि का था यह उपहार
हुमायूँ रोया बारम्बार
हार बन कर भूले सुकुमार
हाय, चितौर-भूमि की हार !! ४४